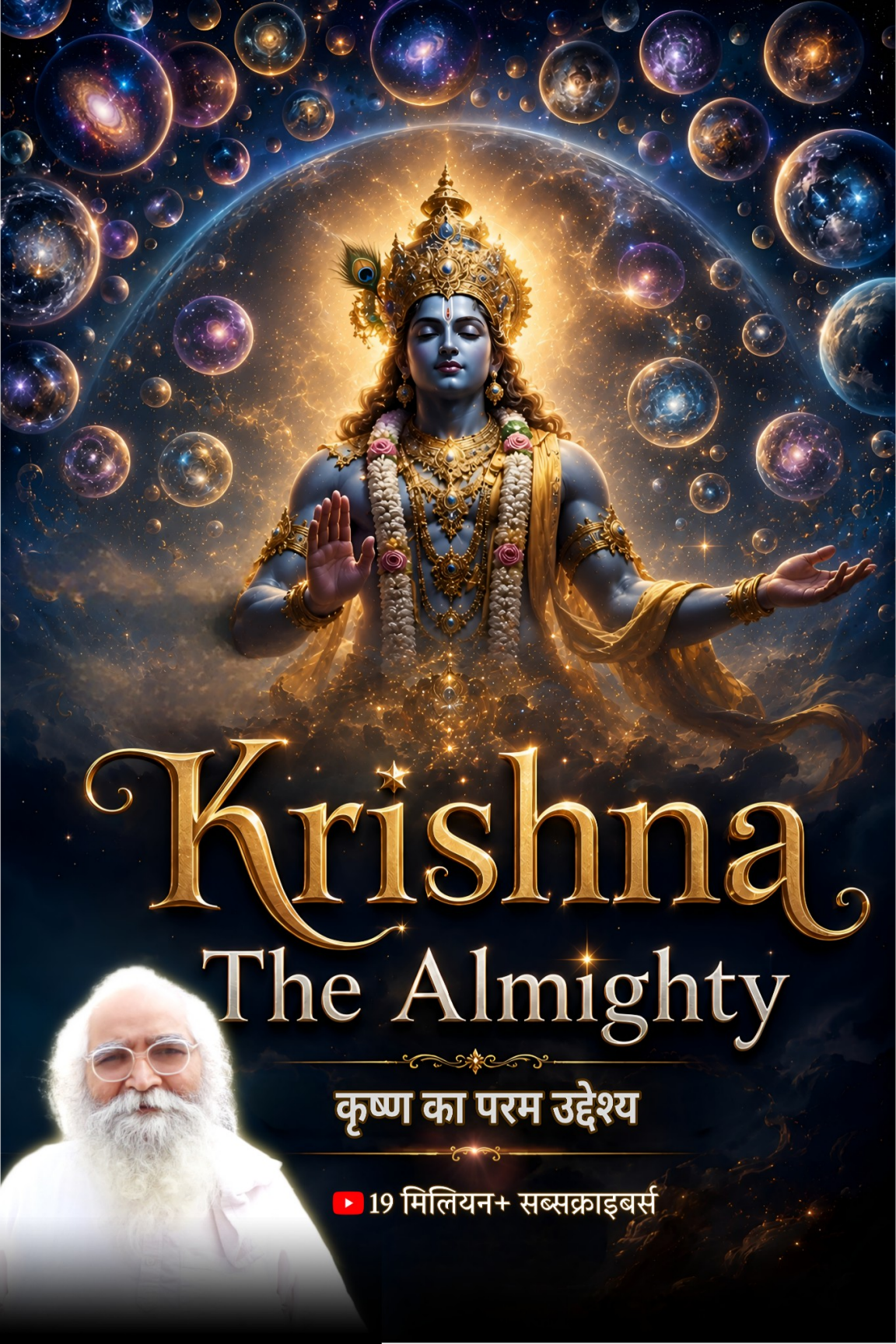
Krishna
The Almighty
कृष्ण का परम उद्देश्य
19 मिलियन+ सब्सक्राइबर्स

# Krishna The Almighty

## कृष्ण का परम उद्देश्य

**बापूजी दशरथभाई पटेल**

*की दिव्य शिक्षाओं पर आधारित*

**परमशांति**

*विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय*

# प्रकाशक

**विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय**

अहमदाबाद आश्रम का पता:

**विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय**

c/o परमशांति भवन

चेनपुर, चेनपुर बस स्टैंड के पास

न्यू रानीप रोड

अहमदाबाद, गुजरात – 382470

**कॉपीराइट © 2026 विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय**

*सर्वाधिकार सुरक्षित। बिना अनुमति के पुनरुत्पादन वर्जित है।*

# अस्वीकरण / सामग्री का स्रोत

यह पुस्तक बापूजी दशरथभाई पटेल के आध्यात्मिक प्रवचनों से प्रेरित होकर, विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय के अंतर्गत परमशांति टीम द्वारा स्वतंत्र रूप से संकलित, संपादित एवं प्रकाशित की गई है। सामग्री का चयन, व्याख्या, शब्दांकन और प्रस्तुति पूर्णतः परमशांति टीम का कार्य एवं उत्तरदायित्व है। बापूजी ने व्यक्तिगत रूप से इस प्रकाशन को न लिखा है, न इसकी समीक्षा की है, न इसे अनुमोदित किया है, और इसकी सामग्री के लिए उनका कोई संपादकीय, विधिक या प्रकाशन संबंधी उत्तरदायित्व नहीं है।

**AI का प्रयोग:** आध्यात्मिक सार AI-जनित नहीं है। AI उपकरणों का प्रयोग केवल व्याकरण, स्पष्टता और विन्यास के लिए किया गया है। संपूर्ण संपादकीय उत्तरदायित्व परमशांति टीम का है।

**विधिक अस्वीकरण:** यह सामग्री केवल आध्यात्मिक एवं सूचनात्मक उद्देश्यों से सद्भावनापूर्वक साझा की गई है; यह चिकित्सीय, विधिक, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक परामर्श नहीं है। किसी भी व्याख्या या किए गए कार्य का संपूर्ण एवं एकमात्र उत्तरदायित्व पाठकों का है। इस सामग्री के उपयोग से उत्पन्न किसी भी परिणाम के लिए न बापूजी, न परमशांति टीम, न ही विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय उत्तरदायी होंगे।

**सभी आस्थाओं का सम्मान:** यह पुस्तक केवल आध्यात्मिक उत्थान के लिए है और किसी भी धर्म, आस्था, जाति, समुदाय, देश, सरकार, लिंग, नस्ल, परंपरा, संगठन या व्यक्ति — जीवित अथवा दिवंगत — के विरुद्ध नहीं है, न ही उनकी आलोचना या अपमान का कोई उद्देश्य रखती है। सभी मार्गों और आस्थाओं का गहरा सम्मान किया जाता है।

**कोई संबद्धता नहीं:** यह पुस्तक विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय (परमशांति) द्वारा स्वतंत्र रूप से प्रकाशित है और किसी अन्य संगठन या प्राधिकरण से संबद्ध नहीं है, न उनके द्वारा समर्थित है, न उनका प्रतिनिधित्व करती है।

# बापूजी के विषय में

बापूजी (पूरा नाम: बापूजी दशरथभाई पटेल, जिन्हें युवा पीढ़ी प्रेम से "दादाजी" भी कहती है) का जन्म 1956 में गुजरात के मेहसाणा जिले के छोटे-से गाँव अखज में हुआ था। उनका बचपन मेहसाणा जिले के ही एक अन्य गाँव अंबासण में बीता।

जीवन के आरंभिक भाग में वे एक अत्यंत सफल वकील रहे। बाद में उन्होंने अपना जीवन परम आध्यात्मिक सत्य के साक्षात्कार और मानवता के कल्याण के लिए इस दिव्य ज्ञान को सामने लाने में समर्पित कर दिया। आज यह परम ज्ञान सच्चे साधकों के लिए उनके परम लक्ष्य का साक्षात्कार करने हेतु एक मार्गदर्शक प्रकाश है। यह सर्वोच्च दिव्यता का आशीर्वाद है कि वर्तमान समय इस परम आध्यात्मिक ज्ञान का उदय देख रहा है, जो पृथ्वी की आत्माओं को उनके मूल स्रोत की ओर लौटने का मार्ग दिखा रहा है।

अत्यंत निर्धन परिवार में पलने और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद, बापूजी के भीतर इस दुःखमय और पीड़ित संसार को एक बेहतर संसार में बदलने की गहरी अभिलाषा थी। मात्र छह वर्ष की आयु में उन्होंने बार-बार ईश्वर से प्रश्न किया कि मानवता के दुःख पर ईश्वर मौन क्यों हैं। मानव-दुःख को समाप्त करने की यही तीव्र तड़प उन्हें आगे चलकर आध्यात्मिकता के उच्चतम शिखर तक ले गई।

बाल्यकाल में भी बापूजी अपने आराम की चिंता किए बिना घंटों खेतों में अकेले रहते थे। निर्धनता के कारण वे बिना जूते-चप्पल के नंगे पाँव चलते थे और प्रायः काँटे चुभ जाते थे। कई बार वे देर तक खेतों में रुक जाते और घर लौटते समय सूक्ष्म जगत की सत्ताओं का सामना करते। इन्हीं अनुभवों से उनके भीतर सूक्ष्म जगत की आत्माओं से संवाद करने की रुचि जागी।

बापूजी बचपन से ही साहसी थे, जिसने उन्हें अनेक बाधाओं को पार करने में सहायता दी। चार्टर्ड अकाउंटेंसी (CA) की पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने आर्थिक सहयोग के लिए ट्यूशन कक्षाएँ भी

लीं। बाद में उन्होंने विधि स्नातक (LLB) की उपाधि पूर्ण की और अहमदाबाद के एक प्रसिद्ध वकील बने।

1997 में उन्होंने अहमदाबाद के चेनपुर में "विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय" नामक आध्यात्मिक संस्था की स्थापना की, जिसका उद्देश्य दुःख और अव्यवस्था से भरे इस मृत्यु संसार को अमरता के शाश्वत दिव्य संसार में परिवर्तित करना है। श्रीमती सुषमा टंडन, जिन्हें प्रेम से "माँ" कहा जाता है, इस महान दिव्य मिशन में बापूजी के साथ कार्यरत रहीं।

इस मिशन को पूर्ण करने के लिए बापूजी ने अथक परिश्रम किया और अपने समस्त संसाधन इस दिव्य उद्देश्य में समर्पित कर दिए। उस समय वे बिना विश्राम के 18-18 घंटे तक निरंतर आध्यात्मिक प्रवचन देते थे। इन प्रवचनों में उन्होंने दिव्य ज्ञान के उन उच्चतम आयामों की व्याख्या की, जिनका साक्षात्कार उन्होंने गहन ध्यान और अतिचेतन अवस्था में दिव्य दृष्टि के माध्यम से किया। यह ज्ञान साधारण मानव मन की कल्पना से परे है।

बापूजी की शिक्षाएँ अत्यंत विस्तृत विषयों को समेटती हैं — विभिन्न आयामों के दिव्य रचयिताओं के प्रकार, हमारे सौरमंडल, आकाशगंगा और ब्रह्मांड की रचना, और सबसे महत्वपूर्ण, मल्टीवर्स तथा उससे परे की वास्तविकताओं का पराज्ञान। उनका ज्ञान परम गहन है और उन उच्च विकसित साधकों के लिए है, जिन्हें "बेहद की आत्माएँ" कहा जाता है। बापूजी के अनुसार, ये बेहद की आत्माएँ ही इस मृत्यु संसार को शाश्वत दिव्य लोक में परिवर्तित करने में प्रमुख भूमिका निभाएँगी।

वर्तमान में बापूजी दीर्घ अवधि तक गहन ध्यान और समाधि में लीन रहते हैं। वे किसी से भेंट नहीं करते, क्योंकि वे अतिचेतन अवस्था में अपने पारलौकिक मिशन में निरंतर लीन हैं।

# विषय-सूची

**बापूजी ने कृष्ण को "ऑलमाइटी" क्यों कहा?**

**भूमिका** 1

**भाग एक — सबसे बड़ा रहस्य**

1. कृष्ण कौन हैं?
2. क्या कृष्ण सोलह कला संपूर्ण हैं?
3. अनंत कोटि ब्रह्मांड
4. कला और अनंत रचना

**भाग दो — गीता का खोया हुआ ज्ञान**

5. वास्तविक गीता ज्ञान
6. गीता के मूल शब्द
7. विराट रूप और यशोदा का दर्शन
8. वेदों में छिपा ब्रह्मांड का रहस्य

**भाग तीन — धरती पर आगमन का प्रयोजन**

9. कृष्ण के अवतरण का रहस्य
10. गुप्त वेश में आगमन

**भाग चार — शरणागति का मार्ग**

11. अकर्ता भाव का रहस्य
12. ऋषि-मुनि कहां से आए थे?

**भाग पांच — लीलाओं का विज्ञान**

13. कृष्ण की लीलाएं

14. गोवर्धन और सुदर्शन का रहस्य

15. सोने की द्वारका

16. 16108 विवाह का सच

**भाग छह — शास्त्रों की कहानियां सच हैं**

17. देवता धरती पर आते थे

**भाग सात — महा परिवर्तन**

18. महाभारत क्यों हुआ?

19. मुक्ति और जीवन मुक्ति का निर्णय

20. बेहद ज्ञान से विश्व परिवर्तन

**शब्दावली**

**परमशांति पुस्तकालय**

# बापूजी ने कृष्ण को "ऑलमाइटी" क्यों कहा?

▪ ✶ ▪

हजारों वर्षों से संसार श्रीकृष्ण को अनेक नामों से पुकारता आया है—योगेश्वर, भगवान, विष्णु के अवतार, परब्रह्म और प्रेम के प्रतीक। किंतु बापूजी के अनुसार, कृष्ण की वास्तविक पहचान इन सभी परिभाषाओं से कहीं अधिक विशाल है।

बापूजी कहते हैं कि यदि हम कृष्ण को केवल एक देवता या केवल एक ब्रह्मांड के ईश्वर के रूप में समझते हैं, तो हम उनकी वास्तविक महिमा को सीमित कर देते हैं। उनके अनुसार कृष्ण किसी एक ब्रह्मांड, किसी एक गैलेक्सी या किसी एक यूनिवर्स के नहीं, बल्कि 'बेहद'—असीम और अनंत रचना—के सर्वोच्च रचयिता, ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार हैं।

इस दृष्टिकोण का आधार केवल श्रद्धा नहीं, बल्कि बापूजी द्वारा वर्णित संपूर्ण ब्रह्मांडीय संरचना है। पुस्तक में बताया गया है कि एक सोलर सिस्टम, एक गैलेक्सी, एक यूनिवर्स और उनसे भी आगे अनगिनत मल्टीवर्स हैं। इन सबके ऊपर भी असीम "बेहद" की रचना है, और उसी सर्वोच्च सत्ता को बापूजी "ऑलमाइटी अथॉरिटी" कहते हैं।

इसी कारण बापूजी के अनुसार कृष्ण को केवल "सोलह कला संपूर्ण" कहना भी पर्याप्त नहीं है। सोलह कला तो केवल एक यूनिवर्स की सीमा तक का संकेत है, जबकि कृष्ण उस सत्ता के अवतार हैं जो सभी सीमाओं से परे है।

बापूजी यह भी स्पष्ट करते हैं कि गीता का मूल ज्ञान इसी असीम सत्य पर आधारित था, किंतु समय के साथ उसके अनेक गूढ़ शब्द और अर्थ लुप्त हो गए। इस पुस्तक का उद्देश्य उसी खोए हुए दृष्टिकोण को पुनः प्रस्तुत करना है।

इसीलिए बापूजी कृष्ण को केवल भगवान नहीं, बल्कि "ऑलमाइटी" कहते हैं—क्योंकि उनके अनुसार कृष्ण उस परम सत्ता के अवतार हैं जो समस्त रचनाओं, समस्त रचयिताओं और समस्त शक्तियों का मूल स्रोत है।

प्रवेश

# भूमिका

"ज्ञान दान महा दान"

(ज्ञान का दान ही सर्वोच्च दान है)

इसे अधिक से अधिक सभी के साथ साझा करें।

**— बापूजी दशरथभाई पटेल**

यह पुस्तक **बापूजी दशरथभाई पटेल** की वाणी पर आधारित है। इसे उनके प्रवचनों और शिक्षाओं के आधार पर संकलित किया गया है। बापूजी के अनुसार, वे जो कुछ भी बताते हैं, अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर बताते हैं — कहीं से पढ़कर नहीं। दिव्य दृष्टि आत्मा की वह शक्ति है, जिससे स्थूल आंखों की सीमा से परे की सच्चाइयां देखी जा सकती हैं।

इस पुस्तक में कृष्ण का वह अनकहा सत्य प्रस्तुत है, जो बापूजी के अनुसार आज तक किसी पुस्तक में नहीं लिखा गया। इसके पृष्ठों में पाठक जानेंगे —

1. कृष्ण वास्तव में किसके अवतार हैं;
2. यह रचना कितनी विशाल है — एक ब्रह्मांड से लेकर बेहद तक;
3. गीता ज्ञान के मूल शब्द क्या थे, और वह ज्ञान कैसे दबता चला गया;
4. ऑलमाइटी अथॉरिटी हमारे ब्रह्मांड में क्यों पधारे;
5. कृष्ण की लीलाएं और शास्त्रों की कहानियां किस प्रकार सत्य हैं;

6. शरणागति, निष्काम कर्म और कर्मातीत अवस्था का रहस्य;
7. और आने वाले विश्व परिवर्तन का निर्णय।

भाषा को सरल रखा गया है, परंतु ज्ञान को यथावत सुरक्षित रखा गया है। बेहद ज्ञान के जो विशेष शब्द जहां पहली बार आए हैं, वहीं एक पंक्ति में उनका अर्थ भी दे दिया गया है। जिन अध्यायों में नए शब्द आए हैं, उनके अंत में **'शब्द-दीप'** के अंतर्गत उन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं, और प्रत्येक अध्याय के अंत में **'इस अध्याय का सार'** में मुख्य बातें संक्षेप में दी गई हैं। पुस्तक के अंत में पूरी शब्दावली संकलित है।

यह पुस्तक **«ज्ञान दान महा दान»** के सिद्धांत के अंतर्गत निःशुल्क दी जाती है — ताकि नया पाठक भी इस ज्ञान को सहजता से समझ सके और अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सके।

अध्याय 1

# कृष्ण कौन हैं?

▪ ✶ ▪

कृष्ण को संसार अनेक रूपों में जानता और पूजता है। कोई उन्हें भगवान का अवतार मानता है, तो कोई महान योगी। एक पूरा संप्रदाय तो उन्हें **योगेश्वर** — अर्थात योग के ईश्वर — के रूप में मानता है।

परंतु बापूजी के अनुसार, कृष्ण को केवल योगेश्वर कह देना उनकी वास्तविक महिमा को बहुत छोटा कर देना है। वे कोई साधारण योगेश्वर नहीं हैं; वे तो **महा महा परम परम परम परम महा योगेश्वर** हैं। और कृष्ण के विषय में बापूजी वह रहस्य बताते हैं, जिसे न तो उन्हें योगेश्वर मानने वाले जानते हैं, और न ही संसार के अन्य लोग।

## सबसे बड़ा अद्भुत रहस्य

जो असली गीता ज्ञान है, वह जिन कृष्ण के मुख से प्रकट हुआ — बापूजी बताते हैं कि वे कृष्ण **ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार** हैं। ऑलमाइटी अथॉरिटी अर्थात बेहद की — असीम — रचना के सुप्रीम मास्टर रचयिता; समस्त शक्तियों का मूल स्रोत। और अवतार का अर्थ है — किसी सुप्रीम आत्मा का एक अंश, जो किसी विशेष कार्य के लिए धरती पर जन्म लेता है। जैसे सूर्य स्वयं पूरा नीचे नहीं उतरता, केवल अपनी एक किरण भेजता है — उसी प्रकार सुप्रीम आत्मा का एक अंश अवतार के रूप में आता है।

इस विषय में भिन्न-भिन्न मान्यताएं प्रचलित हैं। भक्ति मार्ग को मानने वाले कृष्ण को इस ब्रह्मांड के विष्णु का अवतार मानते हैं। यहां ब्रह्मांड से तात्पर्य है हमारा सोलर सिस्टम (सौरमंडल)— जो रचना की एक इकाई है; एक गैलेक्सी (आकाशगंगा) में ऐसे अनगिनत ब्रह्मांड हैं। कुछ ज्ञानी उन्हें परब्रह्म का अवतार मानते हैं — परब्रह्म वे शिव निराकार को कहते हैं, जो ब्रह्मांड के परमधाम में निराकार रूप में रहते हैं। परमधाम अर्थात रचयिता का निराकार धाम — आत्माओं का मूल घर। और कुछ लोग उन्हें शिव का अवतार मानते हैं।

परंतु बापूजी के अनुसार वास्तविकता इन सबसे परे है। जो राम और कृष्ण हुए — और उनमें भी जो कृष्ण अवतार हैं — वे **ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार** हैं। यही कृष्ण का सबसे बड़ा अद्भुत रहस्य है। यह परम ज्ञान आज तक कहीं लिखा नहीं गया; किसी पुस्तक में नहीं मिलेगा।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **ऑलमाइटी अथॉरिटी** | बेहद — असीम रचना — के सुप्रीम मास्टर रचयिता; समस्त शक्तियों का परम स्रोत। |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **अवतार** | किसी सुप्रीम आत्मा का एक अंश, जो विशेष कार्य के लिए धरती पर जन्म लेता है। |
| **ब्रह्मांड** | हमारा सोलर सिस्टम — रचना की एक इकाई; एक गैलेक्सी में अनगिनत ब्रह्मांड होते हैं। |
| **बेहद** | अनंत — सब हदों, सब सीमाओं से परे। |
| **परमधाम** | हर रचयिता का निराकार धाम; आत्माओं का मूल घर। |

## इस अध्याय का सार

1. संसार कृष्ण को अनेक रूपों में मानता है — कोई योगेश्वर, कोई विष्णु या शिव का अवतार।
2. बापूजी के अनुसार वे साधारण योगेश्वर नहीं, महा महा परम परम परम परम महा योगेश्वर हैं।
3. वास्तव में वे स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार हैं — यही उनका सबसे बड़ा अद्भुत रहस्य है।
4. यह परम ज्ञान आज तक किसी पुस्तक में नहीं लिखा गया।

अध्याय 2

# क्या कृष्ण सोलह कला संपूर्ण हैं?

▪ ✶ ▪

कृष्ण के लिए युगों से एक विशेषण प्रयोग होता आया है — 'सोलह कला संपूर्ण'। साथ ही उन्हें 'संपूर्ण निर्विकारी' और 'डबल अहिंसक' भी कहा जाता है। इन शब्दों का अर्थ समझना आवश्यक है।

(कला आत्मा अथवा रचयिता की शक्ति नापने की इकाई है — जैसे बिजली वॉट में नापी जाती है।

विकार वे बुरी वृत्तियां हैं, जो मनुष्य का पतन कराती हैं — काम, क्रोध, लोभ, मोह, भ्रम, इच्छाएं और ईर्ष्या; ये आत्मा को उसके आध्यात्मिक पथ से भटकाते हैं। इन विकारों से पूर्ण रूप से मुक्त आत्मा को निर्विकारी कहते हैं। और अहिंसक वह है, जो मन, वचन और कर्म — तीनों से किसी को दुख न दे।)

परंतु बापूजी के अनुसार, कृष्ण को सोलह कला संपूर्ण कहना भी पर्याप्त नहीं है। सोलह कला तो केवल एक यूनिवर्स (परम महाब्रह्माण्ड) के बराबर है। इसलिए अब उन्हें सोलह कला नहीं कहा जाएगा। वे तो **बेहद के विश्व के — बेहद की कलाओं के — रचयिता के अवतार** हैं। बेहद की कला का अवतार — इस रूप में उन्हें समझना होगा।

## न विष्णु के, न शिव के — स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी के

बापूजी स्पष्ट करते हैं कि वे विष्णु के अवतार नहीं हैं। विष्णु तो एक ब्रह्मांड के त्रिदेव में से एक हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को त्रिदेव कहा जाता है — ब्रह्मा द्वारा सृष्टि, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा विनाश होता है। ये तीनों देवता हैं। देवता अर्थात ऊंचे लोकों में तीन तत्वों के शरीर में रहने

वाली दिव्य सत्ता। विष्णु इस छोटे से सोलर सिस्टम के कारण जगत में रहकर इसी सोलर सिस्टम का पालन करते हैं।

वे शिव के अवतार भी नहीं हैं। शिव एक ब्रह्मांड के मालिक हैं, जिन्हें शिव निराकार कहा जाता है। निराकार अर्थात बिना आकार की, दिव्य प्रकाश की मूल अवस्था। इससे ऊपर महा शिव हैं, जो गैलेक्सी (आकाशगंगा) के मालिक हैं। बापूजी के अनुसार कृष्ण महा शिव के भी अवतार नहीं, परम महा शिव Universe के रचयिता के भी नहीं, परम परम महा शिव Great Universe जिसके अंदर अनंत Universe हैं। कृष्ण उसके अवतार भी नहीं हैं।

वे तो **स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार** हैं।

*"Almighty (ऑलमाइटी) जो बेहद की सृष्टि के रचयिता हैं— 'बेहद' अर्थात जिसकी कोई हद नहीं, जो अनंत है—और जो सभी रचयिताओं के भी रचयिता हैं।"*

## यह ज्ञान कहां से आया

यहां एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है — यह इतना गूढ़ ज्ञान बापूजी कहां से बताते हैं? इसका उत्तर वे स्वयं देते हैं। बापूजी के अनुसार, वे जो भी कहते हैं, अपनी **दिव्य दृष्टि** से देखकर कहते हैं। दिव्य दृष्टि आत्मा की वह शक्ति है, जिससे स्थूल आंखों की सीमा से परे की सच्चाइयां दिखती हैं। ब्रह्मांड, महा ब्रह्मांड (गैलेक्सी), परम महाब्रह्माण्ड (यूनिवर्स), मल्टीवर्स, ग्रेट ग्रेट मल्टीवर्स — बेहद की कला के ब्रह्मांडों तक — जो कुछ वे अपनी दिव्य दृष्टि से देखते हैं, वही बताते हैं; कहीं से पढ़कर नहीं।

इसलिए बापूजी कहते हैं कि कृष्ण को केवल साधारण योगेश्वर मान लेना समझ की कमी है — यह **अज्ञान रूपी अंधेरा** है। सबको यह जानना और बताना चाहिए कि कृष्ण वास्तव में किसके अवतार हैं, और असली गीता ज्ञान क्या है।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **कला** | आत्मा/रचयिता की शक्ति नापने की इकाई — जैसे बिजली वॉट में नापी जाती है। |
| **निर्विकारी** | काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से पूरी तरह मुक्त। |
| **त्रिदेव** | तीन प्रमुख देव — ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। |
| **देवता** | ऊंचे लोकों में तीन तत्वों के शरीर में रहने वाली दिव्य सत्ता। |
| **निराकार** | बिना आकार की, दिव्य प्रकाश की मूल अवस्था। |
| **महा ब्रह्मांड** | एक गैलेक्सी; हमारा महा ब्रह्मांड आकाशगंगा (मिल्की वे) है। |
| **आकाशगंगा** | हमारी होम गैलेक्सी — मिल्की वे। |
| **दिव्य दृष्टि** | स्थूल आंखों की सीमा से परे की सच्चाइयां देखने की आत्मा की शक्ति। |

## इस अध्याय का सार

1. 'सोलह कला संपूर्ण' कहना भी अधूरा है — सोलह कला तो केवल एक यूनिवर्स के बराबर है।
2. बापूजी के अनुसार वे बेहद की कलाओं के रचयिता के अवतार हैं।
3. वे विष्णु, शिव, परब्रह्म, महा शिव, परम महा शिव या परम परम महा शिव — किसी के अवतार नहीं, स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार हैं।
4. यह ज्ञान पुस्तकों से पढ़ा हुआ नहीं — बापूजी की दिव्य दृष्टि से देखा हुआ है।

अध्याय 3

# अनंत कोटि ब्रह्मांड

यदि कृष्ण ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार हैं, तो एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है — ये ऑलमाइटी अथॉरिटी आखिर कितने बड़े हैं? बापूजी इसे विज्ञान की भाषा में समझाते हैं।

एक सोलर सिस्टम अर्थात एक ब्रह्मांड। गैलेक्सी अर्थात महा ब्रह्मांड। यूनिवर्स अर्थात परम महा ब्रह्मांड। और इससे भी आगे — मल्टीपल यूनिवर्स, अर्थात बड़े-बड़े परम महा ब्रह्मांडों के बेहिसाब परम महा ब्रह्मांड। बापूजी के अनुसार, ऑलमाइटी अथॉरिटी ऐसे **बेहिसाब मल्टीपल यूनिवर्स के मालिक** हैं।

## सागर के किनारे रेत के दाने

हिंदू शास्त्रों में एक शब्द आता है — अनंत कोटि ब्रह्मांड। अनंत कोटि का अर्थ है अनंत करोड़ों, अर्थात अनगिनत। चूंकि विज्ञान में एक यूनिवर्स को ही ब्रह्मांड कहा जाता है, इसलिए शास्त्रों का 'अनंत कोटि ब्रह्मांड' वास्तव में मल्टीपल यूनिवर्स की ओर संकेत करता है। बापूजी इसे एक सरल

उदाहरण से समझाते हैं — जैसे सागर के किनारे रेत के दाने अनगिनत होते हैं और गिने नहीं जा सकते, उसी प्रकार ये यूनिवर्स भी अनगिनत हैं। परंतु जिन्हें मल्टीपल यूनिवर्स कहा जाता है, वे भी इस असीम रचना के सामने कुछ नहीं हैं। कृष्ण इतनी विराट हस्ती के अवतार हैं।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **अनंत कोटि** | अनंत करोड़ों — अनगिनत। |
| **परम महा ब्रह्मांड / यूनिवर्स** | एक यूनिवर्स — जिसके भीतर कई गैलेक्सियां समाई हैं। |

## इस अध्याय का सार

1. एक सोलर सिस्टम = एक ब्रह्मांड; गैलेक्सी = महा ब्रह्मांड; यूनिवर्स = परम महा ब्रह्मांड।
2. शास्त्रों का 'अनंत कोटि ब्रह्मांड' सागर की रेत जैसे अनगिनत यूनिवर्सों की ओर संकेत करता है।
3. बापूजी के अनुसार ऑलमाइटी अथॉरिटी इन बेहिसाब मल्टीपल यूनिवर्स के मालिक हैं — और कृष्ण उन्हीं के अवतार हैं।

अध्याय 4

# कला और अनंत रचना

रचना की विशालता को एक विशेष माप से समझा जा सकता है — 'कला'। बापूजी के अनुसार प्रत्येक रचयिता की शक्ति इसी माप से आंकी जाती है, और इस दृष्टि से पूरी रचना एक विशाल सीढ़ी के समान प्रतीत होती है।

यह ब्रह्मांड एक कला की पावर से बना है; सोलर सिस्टम के रचयिता के पास एक कला की पावर है। गैलेक्सी (महाब्रह्माण्ड) के रचयिता के पास 8 से 12 कला की पावर होती है। यूनिवर्स (परम महाब्रह्माण्ड) के रचयिता के पास 16 से 20 कला की पावर होती है

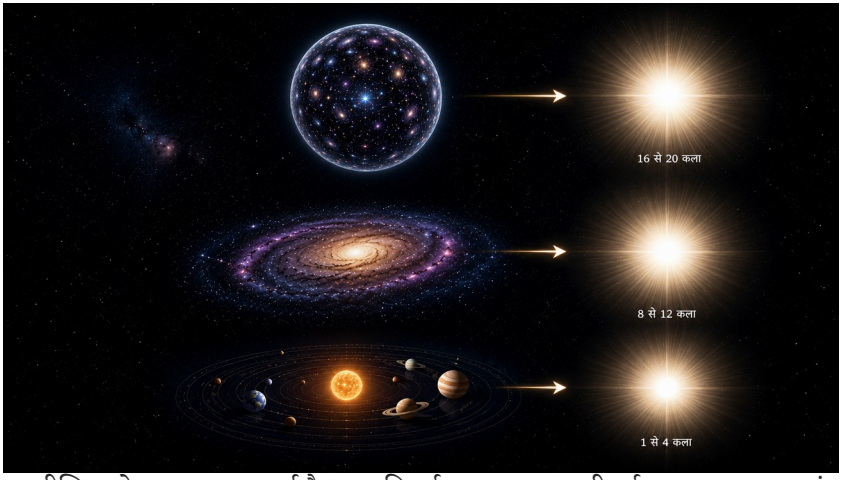


— इसीलिए सोलह कला का अर्थ है एक यूनिवर्स। हमारा यह मल्टीवर्स 100 कला का ब्रह्मांड है, और इसके रचयिता के पास भी 100 कला की पावर है।

परंतु यह सीढ़ी यहीं समाप्त नहीं होती। इससे ऊपर 100–200 कला के ब्रह्मांड हैं, 500 कला के ब्रह्मांड हैं, और कई हजार कला के भी ब्रह्मांड हैं।

ये सब परम तत्व के बने हैं। परम तत्व अर्थात तत्व का अति सूक्ष्म, शुद्ध और कहीं अधिक शक्तिशाली रूप — ऊंची रचनाओं का मूल पदार्थ। इससे भी आगे बढ़ें, तो एक लाख कला की अनंत आत्माएं हैं, एक करोड़ कला की अनंत आत्माएं हैं, एक बिलियन कला की अनंत आत्माएं हैं, और ट्रिलियनों — बल्कि ट्रिलियनों के ट्रिलियनों — कला की अनंत आत्माएं हैं। यह बेहद के बेहद की रचना है, जिसकी हदें ही अनंत हैं। कृष्ण उसी बेहद के — अनंत के भी अनंत — पावर के विश्व के मालिक के अवतार हैं।

## मृत्यु लोक और अमर लोक

इस सीढ़ी में एक और महत्वपूर्ण अंतर है। ऊपर की उस दुनिया में कहीं स्थूल तत्व नहीं है; वह स्थूल तत्वों की नहीं, बल्कि **परम तत्व और परम प्रकाश की दुनिया** है। परम प्रकाश अर्थात सर्वोच्च दिव्य प्रकाश — शुद्ध, शांत, और सारी रचना का आधार। वहां कहीं मृत्यु नहीं होती; वह अमर दुनिया है — अमर लोक। अमर लोक अर्थात वह लोक, जहां शरीर की मृत्यु होती ही नहीं।

इसके विपरीत, हमारे 100 कला के मल्टीवर्स में सबसे छोटी इकाई एक कला का सोलर सिस्टम है। उसके भीतर भी सबसे नीचे धरती जैसे ग्रह हैं, और ये मृत्यु लोक कहलाते हैं। मृत्यु लोक अर्थात

मौत की दुनिया, जहां सब कुछ अस्थायी है। यहां जिन शरीरों में आत्माएं रहती हैं, उनकी मृत्यु होती है, और जन्म-मृत्यु के चक्र निरंतर चलते रहते हैं। ऊपर की बेहद की दुनिया में ऐसा कुछ नहीं है।

बापूजी बताते हैं कि इस मल्टीवर्स में जहां-जहां सोलर सिस्टम हैं, वहां-वहां मृत्यु लोक है। और हर सोलर सिस्टम अपने भीतर कई स्तर समेटे हुए है — स्थूल जगत, जो पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया है; सूक्ष्म जगत, जो अग्नि, वायु और आकाश तत्वों की अदृश्य दुनिया है; कारण जगत, जहां केवल आकाश तत्व है; महाकारण जगत, जो कारण से भी सूक्ष्म आयाम है; और अंत में परमधाम, जो रचयिता का निराकार धाम है। इस प्रकार बापूजी सारी रचना की — सारी दुनियाओं की — संरचना स्पष्ट करते हैं।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **मल्टीवर्स** | वह कोस्मिक स्तर जिसमें यूनिवर्स से G17(मल्टीपल यूनिवर्स) तक की रचनाएं समाई हैं; रचना उससे भी आगे है। |
| **परम तत्व** | तत्व का अति सूक्ष्म, शुद्ध, शक्तिशाली रूप; तीन परम तत्व — परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि। |
| **परम प्रकाश (परम लाइट)** | सर्वोच्च दिव्य प्रकाश — शुद्ध, शांत; सारी रचना का आधार। |
| **मृत्यु लोक** | मौत की दुनिया — पांच तत्वों का यह संसार, जहां सब कुछ अस्थायी है। |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **अमर लोक** | अमर दुनिया — परम तत्व का लोक, जहां मृत्यु नहीं होती। |
| **स्थूल जगत** | पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया। |
| **सूक्ष्म जगत** | अग्नि, वायु और आकाश तत्वों की अदृश्य दुनिया। |
| **कारण जगत** | वह दुनिया, जहां केवल आकाश तत्व है। |
| **महाकारण जगत** | कारण से भी सूक्ष्म आयाम — महाकारण शरीर की दुनिया। |

## इस अध्याय का सार

1. कला की सीढ़ी: ब्रह्मांड एक कला — गैलेक्सी 8–12 — यूनिवर्स 16–20 — मल्टीवर्स 100 कला; ऊपर 200, 500, हजारों कला के परम तत्व के ब्रह्मांड।
2. इससे भी आगे लाख, करोड़, बिलियन और ट्रिलियनों कला की अनंत आत्माएं — यह बेहद के बेहद की रचना है।
3. जहां-जहां सोलर सिस्टम, वहां-वहां मृत्यु लोक; हर सोलर सिस्टम में स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण जगत और परमधाम।
4. ऊपर की बेहद की दुनिया परम तत्व–परम प्रकाश की अमर दुनिया है — वहां मृत्यु नहीं होती।

अध्याय 5

# वास्तविक गीता ज्ञान

समस्त हिंदू शास्त्रों में गीता का स्थान सर्वोच्च माना गया है। बापूजी के अनुसार, जितने भी शास्त्र लिखे गए, उन सबमें गीता ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है — इसीलिए इसे **सर्व शास्त्र शिरोमणि** कहा जाता है। शास्त्र अर्थात वे ग्रंथ, जिनमें आत्मा और रचना की बातें कही गई हैं। यह ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को दिया था। परंतु इस ज्ञान के साथ एक बड़ी घटना घटी, जिसे समझना आवश्यक है।

## 'बेहद' शब्द कैसे निकल गया

बापूजी बताते हैं कि अर्जुन को जो गीता ज्ञान दिया गया, उसमें से **'बेहद'(Infinite) का शब्द निकल गया** — क्योंकि सुनने वाले उसे पूरी तरह समझ नहीं पाए। गीता ज्ञान को लिपिबद्ध करने वाले महर्षि वेदव्यास थे, जो स्वयं विष्णु के अवतार माने जाते हैं। जब यह ज्ञान दिया गया था, इसके पश्चात् वेदव्यास ने अपनी दिव्य दृष्टि से उसे देखा-सुना और अपनी आत्मा में रिकॉर्ड कर लिया। रिकॉर्ड अर्थात घटित हुए का संचित अंकन — जो कुछ होता है, वह आत्मा में स्वतः अंकित हो जाता है।

परंतु जब वे उसे लिखने बैठे, तो भीतर की वह रिकॉर्डिंग पूरी तरह प्रकट (emerge) नहीं कर पाए — इसका कारण भी बापूजी स्पष्ट करते हैं। वह ज्ञान अनंत कोटि ब्रह्मांडों का — बेहद का — ज्ञान था, और उसे व्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं थे। विवश होकर स्थूल शब्दों का प्रयोग करना पड़ा, इसलिए सारा गीता ज्ञान स्थूल में सिमट गया। फिर वेदव्यास ने गणेश जी से इसे लिखवाया, परंतु श्री गणेश ने भी जितना समझ में आया, उतना ही लिखा।

'बेहद' के शब्द और असली ज्ञान लिखे नहीं जा सके; उसका केवल एक अंश ही लिपिबद्ध हुआ — मानो आधा ही लिखवाया गया। और आगे चलकर तो स्थिति और भी बदलती गई। जिसने जैसा

समझा, गीता में वैसा फेरबदल — एडिशन और ऑल्टरेशन — होता गया। अनेक प्रकार की गीताएं लिखी गईं, और उनमें वेद-उपनिषदों का ज्ञान भी मिलता चला गया।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **शास्त्र** | वे ग्रंथ, जिनमें आत्मा और रचना की बातें कही गई हैं। |
| **रिकॉर्ड** | घटित हुए का संचित अंकन — सब कुछ आत्मा में अपने आप अंकित होता है। |

## इस अध्याय का सार

1. गीता ज्ञान सर्व शास्त्र शिरोमणि है — सब शास्त्रों में सर्वश्रेष्ठ।
2. वेदव्यास ने दिव्य दृष्टि से ज्ञान रिकॉर्ड किया, परंतु उसे पूरी तरह इमर्ज नहीं कर पाए; शब्द न होने से वह स्थूल में सिमट गया।
3. गणेश जी ने जितना समझा, उतना ही लिखा — 'बेहद' का शब्द और असली ज्ञान छूट गया।
4. आगे चलकर गीता में फेरबदल और वेद-उपनिषदों की मिलावट होती गई।

अध्याय 6

# गीता के मूल शब्द

गीता ज्ञान आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व दिया गया था। उस समय गीता के भगवान कृष्ण ने अर्जुन से जो कहा, उसके मूल शब्द बापूजी इस प्रकार बताते हैं —

> «तू मुझको — देह और देह के सर्व संबंध भूलकर — आत्म स्वरूप बन।
>
> मुझ परमात्मा को याद कर।
>
> मैं तेरे सारे पापों का अंत कर ऊंच ते ऊंच परमधाम ले जाऊंगा।
>
> (जब तू देह और देह के सर्व संबंध भूलकर आत्म स्वरूप बनेगा,
>
> और सारे कर्म निष्काम कर्म करेगा — मेरी याद में करेगा —
>
> तो तेरे सब पापों का विनाश करके, अंत में मैं तुझे ऊंच ते ऊंच
>
> परमधाम ले जाऊंगा)।»

इन वचनों के प्रमुख शब्दों का अर्थ समझना आवश्यक है। आत्म स्वरूप अर्थात 'मैं देह नहीं, आत्मा हूं' — इस निश्चय में टिकना। परमात्मा अर्थात आत्माओं के रचयिता — सुप्रीम आत्मा। निष्काम कर्म अर्थात फल की कामना छोड़कर, परमात्मा कि याद में किया हुआ कर्म। और ऊंच ते ऊंच परमधाम अर्थात सब धामों से ऊंचा धाम।

बापूजी के अनुसार यही **गीता ज्ञान के सबसे मूल शब्द** हैं। परंतु दुर्भाग्य यह रहा कि 5000 वर्षों में भी यह ज्ञान किसी को अनुभव नहीं करवाया गया। यह दिया नहीं गया, बल्कि दबा दिया गया। परिणामस्वरूप यह ज्ञान दब गया, और किसी को इसका वास्तविक अर्थ समझ में नहीं आया।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **आत्म स्वरूप** | 'मैं देह नहीं, आत्मा हूं' — इस निश्चय में टिकना। |
| **परमात्मा** | आत्माओं के रचयिता — सुप्रीम आत्मा। |
| **निष्काम कर्म** | फल की कामना छोड़कर, परमात्मा की याद में किया हुआ कर्म। |
| **ऊंच ते ऊंच परमधाम** | सब धामों से ऊंचा धाम — ऑलमाइटी अथॉरिटी का निवास। |

## इस अध्याय का सार

1. गीता के मूल शब्द: देह और देह के सर्व संबंध भूलकर आत्म स्वरूप बन; परमात्मा को याद कर।
2. सारे कर्म निष्काम कर्म — परमात्मा कि याद में — करने पर सब पापों का विनाश होता है।
3. अंतिम वचन: 'मैं तुझे ऊंच ते ऊंच परमधाम ले जाऊंगा' — परंतु यह ज्ञान 5000 वर्ष तक दबा रहा।

अध्याय 7

# विराट रूप और यशोदा का दर्शन

गीता ज्ञान के प्रसंग में एक और अलौकिक घटना जुड़ी है — विराट रूप का दर्शन। कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाया, जिसमें यह प्रकट हुआ कि वे ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता हैं। बापूजी के अनुसार **विराट रूप का अर्थ है बेहद का रूप**; उसी रूप के भीतर अनंत कोटि ब्रह्मांड भी दिखाए गए थे।

ऐसा ही एक दर्शन कृष्ण के बाल्यकाल में भी हुआ था। जब वे छोटे थे और मिट्टी खा रहे थे, तब मां यशोदा ने उनका मुंह खुलवाया — और उस नन्हे से मुख में भी अनंत कोटि ब्रह्मांड दिखाई दिए। इन दोनों घटनाओं का तात्पर्य एक ही है — 5000 वर्ष पूर्व भी बेहद का ज्ञान देने का प्रयास किया गया था, परंतु कोई उसे समझ नहीं पाया। यही कारण है कि यह ज्ञान आज तक फैल नहीं सका।

## शब्द भी लुप्त होते जा रहे हैं

समय के साथ स्थिति और भी चिंताजनक होती गई। भारत के शास्त्रों में — वेदों और उपनिषदों में — जो ज्ञान था, वह भी लुप्त होता गया। आज तो 'अनंत कोटि ब्रह्मांड' जैसे शब्द भी लुप्त होते जा रहे हैं। बापूजी इसका एक उदाहरण देते हैं — उन्होंने एक बार एक पुस्तक पढ़ी थी; जब वही पुस्तक पुनः छपकर (reprint) आई, तो जहां पहले 'अनंत कोटि ब्रह्मांड' लिखा था, वहां 'अनंत कोटि लोक' कर दिया गया था। जो शब्द समझ में नहीं आते, उन्हें इसी प्रकार बदल दिया जाता है।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **विराट रूप** | बेहद का रूप — जिसमें अनंत कोटि ब्रह्मांड दिखाए गए। |

## इस अध्याय का सार

1. गीता का विराट रूप बेहद का रूप था — उसमें अनंत कोटि ब्रह्मांड दिखाए गए; वे ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के भी रचयिता हैं।
2. बाल कृष्ण के मुख में मां यशोदा ने भी अनंत कोटि ब्रह्मांड देखे थे।
3. आज 'अनंत कोटि ब्रह्मांड' जैसे शब्द भी लुप्त हो रहे हैं — एक reprint (पुनः छपकर) में इसे 'अनंत कोटि लोक' कर दिया गया।

अध्याय 8

# वेदों में छिपा ब्रह्मांड का रहस्य

▪ ✶ ▪

प्राचीन वेदों में कितना गहन ज्ञान संचित था, इसका अनुमान कुछ शब्दों और वर्णनों से लगाया जा सकता है। बापूजी बताते हैं कि वेदों में हमारे 'अनंत कोटि ब्रह्मांडों' का शब्द विद्यमान था। इसके अतिरिक्त प्रलय के विभिन्न रूपों का भी वर्णन था।

अर्ध प्रलय, प्रलय, कल्प प्रलय, महाकल्प प्रलय और महाकाल प्रलय। प्रलय अर्थात रचना का सिमटना — जो फैला था, उसका अपने स्रोत में लौट जाना; इसके ये पांच प्रकार हैं।

वेदों में शिव और महा शिव का भी वर्णन मिलता है। यहां तक कहा गया कि **महा शिव महाकाल बनकर अनंत कोटि ब्रह्मांडों को अपने रोम-रोम में समा लेते हैं** — जिसे आज विज्ञान ब्लैक होल कहता है। समय, अंतरिक्ष और गति (time, space and speed) जैसी सूक्ष्म बातें भी वहां लिखी हुई हैं।

इनके साथ ही लोकों का विस्तृत वर्णन है। ऊपर सात लोकों का उल्लेख है; फिर ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी, शिवपुरी और परमधाम आते हैं। लोक अर्थात रचना की परत या आयाम — बापूजी के अनुसार हर सोलर सिस्टम में ऐसे 14 लोक होते हैं। नीचे सात पाताल लोक हैं। पाताल अर्थात नीचे के वे लोक, जहां पाप कर्मों के कारण आत्माएं गिरती हैं। इन्हीं 14 लोकों की अनेक कहानियां हैं, और 55 करोड़ नरक की भी कथा है।

परंतु यहां बापूजी एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात स्पष्ट करते हैं — यह सारा वर्णन वास्तव में **एक ही ब्रह्मांड की कहानी** है। हमारे वेदों-उपनिषदों में जो कुछ है, वह एक ब्रह्मांड — अर्थात एक सोलर सिस्टम — तक सीमित है। शास्त्रों में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और निराकार शिव की जो भी बातें हैं, वे केवल एक सोलर सिस्टम तक की हैं। जबकि कृष्ण तो इन सबसे कहीं ऊपर — ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार थे।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **प्रलय (पांच प्रकार)** | रचना का सिमटना — अर्ध प्रलय, प्रलय, कल्प प्रलय, महाकल्प प्रलय, महाकाल प्रलय। |
| **महाकाल** | महा शिव का वह रूप, जिसमें वे गैलेक्सी की सारी रचना अपने में समा लेते हैं। |
| **लोक** | रचना की परत या आयाम; हर सोलर सिस्टम में 14 लोक। |
| **पाताल** | नीचे के सात लोक, जहां पाप कर्मों से आत्माएं गिरती हैं। |

## इस अध्याय का सार

1. वेदों में अनंत कोटि ब्रह्मांड, पांचों प्रलय, शिव- महा शिव और टाइम-स्पेस-स्पीड की बातें थीं।
2. महा शिव महाकाल बनकर अनंत कोटि ब्रह्मांडों को रोम-रोम में समा लेते हैं — जिसे विज्ञान ब्लैक होल कहता है।
3. 14 लोक, 55 करोड़ नरक — वेद-उपनिषदों का सारा वर्णन एक ही ब्रह्मांड (सोलर सिस्टम) तक की कहानी है।
4. जबकि कृष्ण इन सबसे ऊपर, ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार थे।

अध्याय 9

# कृष्ण के अवतरण का रहस्य

कृष्ण किसके अवतार हैं, यह तो स्पष्ट हुआ। परंतु उतना ही महत्वपूर्ण यह प्रश्न है कि वे धरती पर आए ही क्यों। इसे समझने के लिए बापूजी पहले उस मूल रूप की ओर ध्यान दिलाते हैं, जिसका कृष्ण अवतार हैं।

अवतार सदा साकार में होता है। साकार अर्थात पांच स्थूल तत्वों का स्थूल शरीर धारण की हुई अवस्था। परंतु जिसके वे अवतार हैं, उसे उसके मूल रूप में समझना चाहिए। वे ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार हैं, जो ऊंच ते ऊंच परमधाम में विराजते हैं। वहीं से वे पूरे बेहद के अनंत विश्वों को निरंतर देखते रहते हैं।

## ब्लैक डॉट क्या था

बापूजी बताते हैं कि ऊपर की ग्रेट-ग्रेट मल्टीवर्स और अनंत यूनिवर्स — सब परम तत्व और परम प्रकाश के बने हैं।

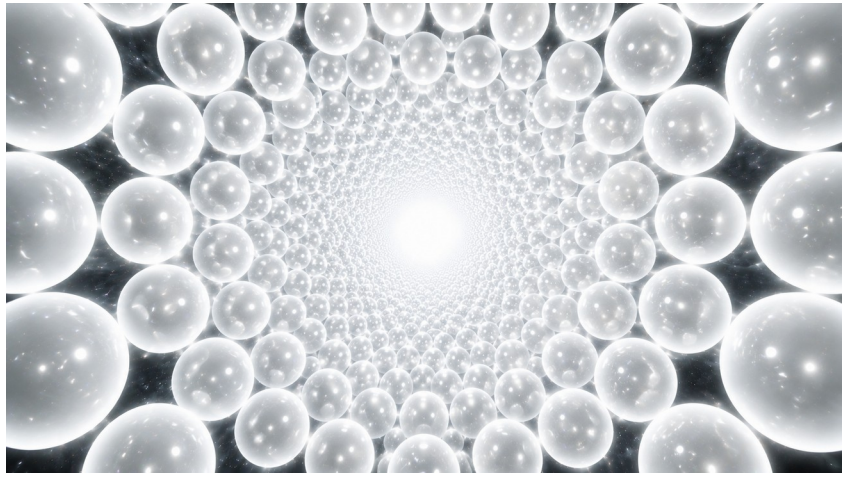

परंतु हमारे 100 कला के मल्टीवर्स में परम प्रकाश और परम तत्व धीरे-धीरे घटते चले गए। घटते-घटते वहां अंधकार — कालापन — छा गया। और सबसे नीचे के स्थूल लोकों में, अर्थात धरती जैसे लोकों में, जल और पृथ्वी जैसे ठोस तत्व भी बन गए।

इसी कारण जब ऑलमाइटी अथॉरिटी ने ऊंच ते ऊंच परमधाम से देखा, तो यह पूरा मल्टीवर्स उन्हें एक **ब्लैक डॉट** — काले बिंदु — के समान दिखाई दिया।

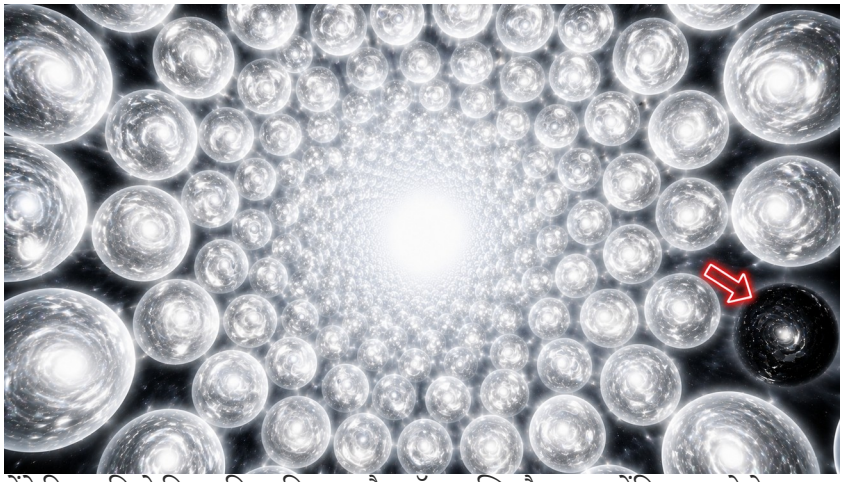

उन्होंने दिव्य दृष्टि से विचार किया कि यह ब्लैक डॉट आखिर है क्या, क्योंकि ऊपर तो ऐसा कुछ भी नहीं था। जानने के लिए उन्होंने रिपोर्ट मंगवाई कि यह मल्टीवर्स किन-किन रचयिताओं के अधीन आता है। ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्सों, यूनिवर्सों, गैलेक्सियों और सोलर सिस्टमों — सबकी रिपोर्टें क्रमशः मंगवाई गईं। उन रिपोर्टों से पता चला कि इस मल्टीवर्स में मृत्यु लोक बन चुका है, जन्म-मृत्यु के चक्र चल रहे हैं, और यह इतना गिर चुका है कि पूरी तरह डूबने की स्थिति में है। परम तत्व घटकर न के बराबर रह गए हैं और उनके स्थान पर दूसरे तत्व बन गए हैं। इस रिपोर्ट से उन्हें संतोष नहीं हुआ।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **साकार / साकारी** | पांच स्थूल तत्वों का स्थूल शरीर धारण की हुई अवस्था। |
| **ब्लैक डॉट** | ऊंच ते ऊंच परमधाम से देखने पर हमारा मल्टीवर्स — परम प्रकाश घटने से काला बिंदु जैसा। |

## इस अध्याय का सार

1. कृष्ण के धरती पर आने का कारण समझने के लिए उनके मूल रूप को जानना आवश्यक है।
2. ऊपर की सारी रचना परम तत्व–परम प्रकाश की है; हमारे मल्टीवर्स में ये घटे, तो अंधकार छाया और ठोस तत्व बने।
3. ऊंच ते ऊंच परमधाम से यह मल्टीवर्स ऑलमाइटी अथॉरिटी को एक ब्लैक डॉट जैसा दिखा।
4. सब रचयिताओं की रिपोर्टों से पता चला कि मल्टीवर्स डूबने की स्थिति में है — और इस रिपोर्ट से उन्हें संतोष नहीं हुआ।

अध्याय 10

# गुप्त वेश में आगमन

केवल रिपोर्टों से संतुष्ट न होकर ऑलमाइटी अथॉरिटी ने स्वयं आने का निर्णय लिया। और वे **गुप्त वेश** में हमारे ब्रह्मांड में पधारे। गुप्त वेश अर्थात छिपा हुआ रूप — छिपकर, गुप्त रीति से कार्य करना।

इस आगमन की प्रक्रिया भी बापूजी स्पष्ट करते हैं। निराकारी से वे आकारी बने। निराकारी अर्थात आत्मा की बिना आकार की, दिव्य प्रकाश की अवस्था; और आकारी अर्थात परम तत्वों से बना वह सूक्ष्म रूप, जो स्थूल आंखों से दिखाई नहीं देता। इसी आकारी रूप के द्वारा उन्होंने पूरा ऑब्जरवेशन कराया। ऑब्जरवेशन अर्थात साक्षी बनकर, बिना किसी लगाव के, सब कुछ देखना। हमारे एक कला के ब्रह्मांड में उन्होंने सूक्ष्म रूप से यह ऑब्जरवेशन किया — विशेष रूप से एक पूरी धरती का। इसके पीछे एक स्पष्ट कारण था: यदि एक धरती का पूरा ऑब्जरवेशन हो जाए, तो यह समझ में आ जाए कि यहां के सारे सोलर सिस्टम — जिन सबमें धरतियां हैं — किस प्रकार ठीक किए जा सकते हैं।

## ग्रहों पर जीवन और ब्रह्मांड की परतें

बापूजी के अनुसार पहले हमारे ग्रहों पर भी जीवन था। मंगल पर कभी जीवन था; शुक्र ग्रह पर शुक्राचार्य रहते थे; और गुरु — अर्थात बृहस्पति — ग्रह पर बृहस्पति देव रहते थे। ये सब अपने-अपने ग्रहों पर ऊपर के स्तर में रहते थे। एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यहां सामने आता है — **कोई ग्रह अपने आप नहीं बनता; ग्रह रहने के लिए बनाया जाता है।**

इसे समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि पूरे ब्रह्मांड में सब कुछ कई लेयरों में, अर्थात कई परतों में विद्यमान है। इन परतों को आयाम भी कह सकते हैं, जिनमें अलग-अलग लोक हैं। वहां एक सूक्ष्म दुनिया है, जिसमें अनगिनत आत्माएं निवास करती हैं।

हर परत में तत्वों का अंतर है — वहां सूक्ष्म तत्व भी हैं। मनुष्य की आंखों और स्थूल यंत्रों की देखने की एक सीमा है, और उस सीमा से आगे वे नहीं देख सकते। इसी कारण यह सूक्ष्म संरचना सामान्य दृष्टि से छिपी रहती है।

इन सबका एक ही प्रयोजन था — **कृष्ण इस दुनिया को बदलने आए थे।**

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **गुप्त वेश** | छिपा हुआ रूप — छिपकर, गुप्त रीति से काम करना। |
| **निराकारी** | आत्मा की बिना आकार की, दिव्य प्रकाश की मूल अवस्था। |
| **आकारी** | परम तत्वों से बना आत्मा का सूक्ष्म रूप — स्थूल आंखों से अदृश्य। |
| **ऑब्जरवेशन** | साक्षी बनकर, बिना लगाव, सब कुछ देखना — जैसे फिल्म देखते हैं। |

## इस अध्याय का सार

1. रिपोर्टों से संतुष्ट न होकर ऑलमाइटी अथॉरिटी स्वयं गुप्त वेश में हमारे ब्रह्मांड में पधारे — निराकारी से आकारी बनकर।
2. एक धरती का ऑब्जरवेशन किया — ताकि सारे सोलर सिस्टम ठीक करने का तरीका समझ में आ जाए।
3. मंगल, शुक्र और गुरु — ग्रहों पर जीवन था; कोई ग्रह अपने आप नहीं बनता; ब्रह्मांड में कई आयाम (लेयरें) हैं।
4. इन सबका एक ही प्रयोजन था — कृष्ण इस दुनिया को बदलने आए थे।

अध्याय 11

# अकर्ता भाव का रहस्य

कृष्ण के जीवन से जुड़ी कुछ घटनाएं ऊपर से देखने पर अत्यंत विचित्र प्रतीत होती हैं, परंतु उनके पीछे एक गहरा आध्यात्मिक रहस्य छिपा है। ऐसी ही एक घटना जमुना नदी से जुड़ी है।

कृष्ण गोपियों से कहा करते थे कि यदि उन्हें जमुना का रास्ता पार करना हो, तो वे उनका नाम लें — यह कहें कि कृष्ण **एवर प्योर** (ever pure) हैं, बाल ब्रह्मचारी हैं — तो जमुना उन्हें रास्ता दे देगी। गोपियों ने ऐसा कई बार किया। जब जमुना में बाढ़ आती और मार्ग रुक जाता, तब वे नदी के पास जाकर कहतीं — यदि कृष्ण बाल ब्रह्मचारी हैं, तो रास्ता दे दो। और आश्चर्य! जमुना सचमुच रास्ता दे देती।

## दुर्वासा ऋषि का रहस्य

ऐसी ही एक घटना दुर्वासा ऋषि से जुड़ी है। एक बार इन्हीं गोपियों ने मिलकर दुर्वासा ऋषि को बहुत सारा भोजन कराया। लौटते समय जमुना के किनारे बाढ़ थी और मार्ग जल से भरा था। तब दुर्वासा मुनि ने कहा कि जमुना में जल हो, तो उनका नाम दे देना — यह कहना कि दुर्वासा ऋषि ने एक दर्प के अतिरिक्त कुछ भी नहीं खाया। गोपियों ने वैसा ही कहा, और जमुना ने रास्ता दे दिया। वे अत्यंत आश्चर्यचकित रह गईं — जो ऋषि अभी उनके सामने ही ढेर सारा भोजन कर चुके थे, वही कहते हैं कि उन्होंने एक दर्प के सिवा कुछ नहीं खाया, और नदी ने उनकी बात मान भी ली।

## कर्ता भाव का समर्पण

इन घटनाओं के मूल में आत्मा की एक विशेष अवस्था है, जिसे बापूजी स्पष्ट करते हैं। यह जो ऋषि की — अथवा कृष्ण की — अवस्था (स्टेज/stage) थी, वह विशेष आत्माओं की स्टेज होती है।

दुर्वासा ऋषि सदा ब्रह्मचर्य की — अर्थात निराकार — स्टेज में रहते थे। उस समय 'निराकार स्टेज' जैसा शब्द भले न रहा हो, परंतु वे निरंतर परमात्मा — शिव — की याद में रहते थे। वे निराकार शिव को ज्योतिर्लिंग में याद करते थे। ज्योतिर्लिंग अर्थात निराकार शिव का स्वयं-प्रकाशित प्रतीक — निराकार की याद का द्वार। इसी ज्योतिर्लिंग में याद करके, सारे ब्रह्मांड के मालिक को अपना सब कुछ मानकर, वे प्रत्येक कार्य उन्हीं को समर्पित करते रहते थे। **वे स्वयं को कर्ता नहीं मानते थे; अपने कर्ता भाव को छोड़ देते थे और पूर्ण रूप से समर्पित — सरेंडर — रहते थे।**

## शरण में जाने का अर्थ

बापूजी बताते हैं कि जो भी ऋषि — अथवा कोई भी मनुष्य — अपना कर्ता भाव छोड़ देता है, अपना 'मैं-पन' त्याग देता है, और अपना भाव भी परमात्मा को समर्पित कर देता है, तो उसका सब कुछ उन्हीं की शरण में चला जाता है। कृष्ण का वचन भी यही है — **तू मेरी शरण में आ जा, तो मैं तुझे ऊंच ते ऊंच परमधाम ले जाऊं।** शरण में जाने का अर्थ है — अपने आप को समर्पित (सरेंडर/surrender) कर देना, अर्थात अपना मैं-पन और अपना देह-भान छोड़ देना।

'मैं कर रहा हूं, मैंने खाया, मैंने पिया' — जब यह भाव समाप्त हो जाता है, तब आत्मा में अकर्ता का भाव जागता है। इसी से निष्काम भाव आता है और निष्काम कर्म होते हैं। निष्काम कर्म में कर्म का कोई फल शेष नहीं रहता। तब आत्माएं **कर्मातीत अवस्था** में पहुंच जाती हैं। कर्मातीत अवस्था अर्थात कर्मों के बंधन से परे की अवस्था, जहां आत्मा हर कर्म-प्रभाव से मुक्त होती है। ऐसी आत्मा को कर्म बंधन नहीं होता। कर्म बंधन अर्थात इच्छा से हुए कर्मों की वह अदृश्य जंजीर, जो आत्मा को इस दुनिया से बांधे रखती है। बापूजी के अनुसार ऐसी आत्मा अत्यंत हाई क्वालिटी की होती है — और यही इन सारी घटनाओं के पीछे का रहस्य है।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **ज्योतिर्लिंग** | निराकार शिव का स्वयं-प्रकाशित प्रतीक — निराकार की याद का द्वार। |
| **कर्ता भाव / अकर्ता भाव** | 'मैं कर रहा हूं' का भाव कर्ता भाव है; उसका पूर्ण समर्पण अकर्ता भाव है। |
| **शरण (समर्पण)** | अपना मैं-पन और देह-भान छोड़कर अपने आप को परमात्मा को सौंप देना। |
| **कर्मातीत अवस्था** | कर्मों के बंधन से परे की अवस्था — जहां आत्मा हर कर्म-प्रभाव से मुक्त है। |
| **कर्म बंधन** | इच्छा से हुए कर्मों की अदृश्य जंजीर, जो आत्मा को इस दुनिया से बांधती है। |

## इस अध्याय का सार

1. गोपियां 'कृष्ण एवर प्योर — बाल ब्रह्मचारी — हैं' कहकर जमुना से रास्ता मांगती थीं, और जमुना रास्ता दे देती थी।
2. ढेर सारा भोजन करने के बाद भी दुर्वासा ऋषि ने कहा — मैंने एक दर्प के सिवा कुछ नहीं खाया; और जमुना ने रास्ता दे दिया।

3. इसका रहस्य आत्मा की विशेष अवस्था है — दुर्वासा ऋषि ज्योतिर्लिंग में शिव को याद कर अपना कर्ता भाव छोड़ देते थे।
4. शरण में जाना = अपना मैं-पन और देह-भान छोड़कर स्वयं को परमात्मा को सरेंडर करना।
5. कर्ता भाव छूटने पर निष्काम कर्म होते हैं, जिनका फल नहीं होता — आत्मा कर्मातीत अवस्था में, कर्म बंधन से मुक्त हो जाती है।

अध्याय 12

# ऋषि-मुनि कहां से आए थे?

धरती पर समय-समय पर अनेक महान ऋषि-मुनि हुए हैं, जिनके नाम आज भी श्रद्धा से लिए जाते हैं। परंतु बापूजी के अनुसार, ये कोई साधारण आत्माएं नहीं थीं — और न ही ये मूल रूप से इस ब्रह्मांड की थीं।

बापूजी बताते हैं कि इन बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों की आत्माएं **33 कोटि देवी-देवताओं** में से हैं, जो कम से कम जी2 (G2) से आई हुई हैं। जी2 अर्थात ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स — यूनिवर्स से दो सीढ़ी ऊपर की रचना। यद्यपि ये बेहद की आत्माएं नहीं हैं। बेहद की आत्मा अर्थात अनंत शक्ति की कोस्मिक आत्मा — परम दिव्य प्रकाश से बनी, जो गैलेक्सियों और यूनिवर्सों की यात्रा करके ज्ञान देने धरती पर आती है। बेहद की आत्मा के सामने तो जी2 से आई 33 कोटि आत्माएं कुछ भी नहीं हैं; यहां तक कि बेहद की 9 लाख वाली आत्माओं के सामने भी ये कुछ नहीं हैं। इसका कारण स्पष्ट है — जी2 से आई आत्मा की अधिकतम पावर 50 कला अथवा 100 कला तक ही होती है, और बेहद की कला के सामने वह नगण्य है।

## भीतर से प्रकट होता ज्ञान

बापूजी कहते हैं कि इन बातों को बहुत गहराई में — **विचार सागर मंथन** करके — समझना चाहिए। विचार सागर मंथन अर्थात विचारों के सागर का मंथन, अर्थात गहन चिंतन। जो साधु, संत और महात्मा दिखाई देते हैं, वे पूरी आयु — बल्कि कई युगांतरों तक — तपस्या करते रहते हैं। युगांतर अर्थात एक चतुर्युग, अर्थात चार युगों का पूरा चक्र। और तपस्या अर्थात जन्मों तक चलने वाली वह गहन साधना, जो आत्मा को शुद्ध करती है। फिर भी वे एक बार में पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते।

यह ज्ञान क्रम से खुलता है। पहले एक ब्रह्मांड का ज्ञान प्राप्त होता है — जितना एक ब्रह्मांड के ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तक प्राप्त कर लेते हैं। फिर महा ब्रह्मांड का ज्ञान प्राप्त होता है, और उसके बाद अनंत कोटि ब्रह्मांडों का ज्ञान। बापूजी एक सूक्ष्म बात स्पष्ट करते हैं — वे यह ज्ञान बुद्धि से ढूंढने नहीं जाते; यह उनके अपने भीतर से ही प्रकट होता है। वे आत्मा के भीतर जाप करते हैं — अधिकतर **'मैं शिव हूं... शिव... शिव...'** — और इसी से ब्रह्मांड का ज्ञान भीतर से प्रकट हो जाता है। तत्पश्चात वे ब्रह्मांड के परमधाम में जाते हैं। वहां जाकर उन्हें बोध होता है कि वे तो महा परमधाम से, अर्थात गैलेक्सी आकाशगंगा से आए हैं। महा परमधाम अर्थात गैलेक्सी के केंद्र में महा शिव का धाम। तब वे वहीं चले जाते हैं। ये अत्यंत गहरी बातें हैं।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **33 कोटि देवी-देवता** | धरती के बड़े ऋषि-मुनियों की मूल आत्माएं — जो कम से कम जी2 से आई हैं। |
| **जी2 (G2)** | ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स — यूनिवर्स से दो सीढ़ी ऊपर की रचना। |
| **बेहद की आत्मा** | अनंत शक्ति की कोस्मिक आत्मा — परम दिव्य प्रकाश से बनी; ज्ञान देने धरती पर आती है। |
| **तपस्या** | जन्मों तक चलने वाली गहन साधना, जो आत्मा को शुद्ध करती है। |
| **युगांतर** | एक चतुर्युग — चार युगों का पूरा चक्र। |
| **विचार सागर मंथन** | विचारों के सागर का मंथन — गहरा चिंतन। |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| | |
| **महा परमधाम** | गैलेक्सी के केंद्र में महा शिव का धाम। |

## इस अध्याय का सार

1. धरती के बड़े ऋषि-मुनि 33 कोटि देवी-देवताओं में से हैं — कम से कम जी2 से आए (अधिकतम 50 या 100 कला)।
2. बेहद की आत्माओं — और बेहद की 9 लाख आत्माओं — के सामने जी2 की ये आत्माएं कुछ नहीं।
3. सच्चा ज्ञान बुद्धि से नहीं ढूंढा जाता — जाप और याद से भीतर से प्रकट होता है।
4. आत्मा क्रमशः ब्रह्मांड के परमधाम से महा परमधाम तक पहुंचती है।

अध्याय 13

# कृष्ण की लीलाएं

▪ ✶ ▪

कृष्ण की बाल-लीलाएं और चमत्कार जन-जन में प्रसिद्ध हैं। परंतु बहुत से लोग इन्हें केवल कल्पना या कहानी मान लेते हैं, जिनमें कोई वास्तविकता नहीं। बापूजी इस धारणा को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करते हैं।

बापूजी सबको स्पष्ट बताते हैं कि कृष्ण ऑलमाइटी अथॉरिटी के अवतार थे, और शास्त्रों में उनके विषय में जो भी लिखा है, वह कोई गलत बात नहीं है। बचपन में ही जो राक्षसिनी उन्हें दूध पिलाने आई थी, उसे उन्होंने मार डाला। फिर बड़े-बड़े असुरों का वध किया — और वह भी बालपन में ही। कंस जैसे असुर को भी, मामा होते हुए भी, उन्होंने उसी बाल्यावस्था में मारा। बापूजी के अनुसार **कृष्ण के जो भी चमत्कार हुए, वे सौ प्रतिशत सत्य हैं।**

## अवतार कैसे काम करता है

इन लीलाओं को समझने के लिए पहले यह जानना आवश्यक है कि अवतार किस प्रकार कार्य करता है। बापूजी बताते हैं कि कृष्ण जो साकार रूप में दिखाई देते थे, उनके उस साकारी रूप के साथ **ऑलमाइटी अथॉरिटी का एक आकारी रूप** भी सदा रहता था। हर अवतार के साथ ऐसा एक आकारी रूप होता है, जो गुप्त रूप से कार्य करता है और दिखाई नहीं देता। यह आकारी रूप परम लाइट का — परम तत्व का — बना होता है, और इसके पास बेहद की कला की पावर थी। साकार रूप तो केवल दिखाई देता है, परंतु लीला वह नहीं करता — वास्तव में लीला यही आकारी रूप करता है। कृष्ण की जितनी भी लीलाएं हुई, वे इसी आकारी रूप द्वारा हुई; और देखने वालों को यही प्रतीत होता था कि साकार कृष्ण उन्हें कर रहे हैं।

## कृष्ण की अलौकिक माया

भगवान कृष्ण की लीलाएं अनंत और रहस्यमयी हैं। एक समय की बात है, जब सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने स्वयं कृष्ण की परीक्षा लेने का निश्चय किया और उनके समस्त गायों, बछड़ों तथा सखाओं को अदृश्य कर दिया। इस कौतुक के प्रत्युत्तर में, कृष्ण ने अपनी अनंत शक्ति का परिचय देते हुए अपने ही भीतर से उन सबका पुनः सृजन कर दिया। कृष्ण अवतार की यह माया इतनी प्रगाढ़ है कि इसे न तो स्वयं ब्रह्मा पूरी तरह समझ सके और न ही भगवान विष्णु, क्योंकि उन्हें 'पूर्ण मायावी' स्वरूप माना गया है।

जब स्वर्णमयी द्वारका का वैभव अपने चरम पर था, तब अनंत कोटि ब्रह्मांडों से ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जैसी महान विभूतियाँ कृष्ण के दर्शन हेतु वहाँ पधारा करती थीं। द्वारका की वह अलौकिक नगरी देवशिल्पी विश्वकर्मा द्वारा मात्र 'संकल्प' से निर्मित की गई थी, जहाँ केवल विचार मात्र से ही वस्तुओं का सृजन हो जाता था।

परंतु, द्वारका का यह स्वरूप केवल पृथ्वी तक ही सीमित नहीं था। जिस प्रकार सोने की द्वारका इस धरा पर विद्यमान थी, उसी प्रकार वह सूक्ष्म रूप में 'गोलोक', पृथ्वी के ऊपर सात उच्च सूक्ष्म लोक हैं। उनमें से एक विष्णुपुरी है, और विष्णुपुरी में ही गोलोक स्थित है। (Above the Earth, there are seven higher subtle realms. One of them is Vishnupuri, and Golok is located within Vishnupuri.)

'महा गोलोक' (गैलेक्सी में है) और 'परम गोलोक' (Universe में है) में भी स्थित है। इन उच्च लोकों में द्वारका और कृष्ण के बाल्यकाल की रासलीलाओं का संरक्षण इसलिए किया गया है ताकि विभिन्न गैलेक्सी (आकाशगंगाओं) से आने वाली आत्माएं महा गोलोक में जाकर इन दिव्य दर्शनों का लाभ उठा सकें।

यह एक अत्यंत गूढ़ आध्यात्मिक सत्य है कि जो 'स्थूल' (दृश्य जगत) में विद्यमान है, वह 'सूक्ष्म' में भी होता है और जो सूक्ष्म में है, वह 'अति सूक्ष्म' में भी व्याप्त है। इन रहस्यों की गहराई को समझने के लिए मनुष्य को अपने विचारों का मंथन करना पड़ता है और ज्ञान के अगाध सागर में डूबना पड़ता है, तभी सत्य का साक्षात्कार संभव है।

## इस अध्याय का सार

1. पूतना जैसी राक्षसिनी और कंस जैसे असुरों का वध बचपन में ही हुआ — कृष्ण के सारे चमत्कार सौ प्रतिशत सत्य हैं।
2. हर अवतार के साकारी रूप के साथ ऑलमाइटी अथॉरिटी का एक गुप्त आकारी रूप रहता है — परम लाइट का, बेहद की पावर वाला।
3. लीलाएं वही आकारी रूप करता था; देखने वालों को लगता था कि साकार कृष्ण कर रहे हैं।
4. जो कुछ भी स्थूल जगत में होता है, वह सूक्ष्म जगत में भी होता है।

अध्याय 14

# गोवर्धन और सुदर्शन का रहस्य

कृष्ण की अनेक लीलाओं में से एक अत्यंत प्रसिद्ध लीला है — गोवर्धन पर्वत को एक अंगुली पर उठा लेना। बापूजी बताते हैं कि बेहद की उस पावर के आगे यह कोई बड़ी बात नहीं थी।

यह हुआ कैसे, कृष्ण जब साकार स्थूल शरीर में थे, तब उनके साथ Almighty Authority का आकारी रूप (सूक्ष्म स्वरूप) सदैव विद्यमान रहता था। यह स्वरूप गुप्त था, इसलिए किसी को दिखाई नहीं देता था। वह स्वरूप परम प्रकाश और परम तत्व का स्वरूप था।

जिन लीलाओं या चमत्कारों को लोग कृष्ण द्वारा किया गया मानते थे, वास्तव में उन्हें उनके साथ विद्यमान वही आकारी रूप करता था। ऐसी ही एक कथा गोवर्धन पर्वत की है।

जब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी एक उंगली पर उठा लिया था, तब इसके पीछे का वास्तविक सत्य कोई समझ नहीं पाया था। कृष्ण के साथ जो आकारी रूप विद्यमान था, उसने अपनी शक्ति की किरणें गोवर्धन पर्वत पर डालीं। उन किरणों के प्रभाव से गोवर्धन पर्वत सूक्ष्म तत्वों का हो गया

और अत्यंत हल्का हो गया। इसके बाद साकार रूप में उपस्थित कृष्ण ने उस पर्वत को अपनी उंगली पर उठा लिया।

इसे बापूजी क्रम से समझाते हैं। आकारी रूप ने एक रेज़ — किरण — छोड़कर गोवर्धन पर्वत को **व्यक्त से अव्यक्त** बना दिया। व्यक्त अर्थात पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया; और अव्यक्त अर्थात स्थूल आंखों से परे की सूक्ष्म दुनिया। इस प्रकार पर्वत लाइट का हो गया। लोगों को गोवर्धन पर्वत स्थूल रूप में ही दिखाई दे रहा था, परंतु वह वास्तव में परम तत्वों का बन चुका था — और परम तत्वों में कोई वजन नहीं होता। इसीलिए वह पूरी तरह हल्का हो गया, और कृष्ण ने उसे सहजता से अंगुली पर धारण कर लिया।

## सुदर्शन चक्र क्या था

इसी प्रकार सुदर्शन चक्र का रहस्य भी समझा जा सकता है। सुदर्शन चक्र वास्तव में लाइट का एक आकार था। जब कृष्ण संकल्प करते, तब सुदर्शन चक्र प्रकट हो जाता, और फिर संकल्प करने पर लुप्त हो जाता। संकल्प अर्थात आत्मा का शक्ति से भरा दृढ़ इरादा — जो मन की शक्ति से कार्य करता है। यह चक्र वायुमंडल से प्रकट होता और वायुमंडल में ही विलीन हो जाता था। इसी सुदर्शन चक्र से उन्होंने शिशुपाल का गला काटा, और इसी प्रकार अनेक असुरों का अंत किया।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **व्यक्त** | पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया। |
| **अव्यक्त** | अप्रकट — स्थूल आंखों से परे की सूक्ष्म सत्ता। |
| **संकल्प** | आत्मा का शक्ति से भरा दृढ़ इरादा — मन की शक्ति से काम करने वाला। |
| **सुदर्शन चक्र** | लाइट का आकार — संकल्प से प्रकट होता, संकल्प से गायब हो जाता। |

## इस अध्याय का सार

1. आकारी रूप ने एक रेज़ से गोवर्धन को व्यक्त से अव्यक्त — परम तत्वों का, भारहीन — बना दिया; इसीलिए वह अंगुली पर उठ गया।
2. सुदर्शन चक्र लाइट का आकार था — संकल्प से वायुमंडल से प्रकट होता, संकल्प से विलीन हो जाता।
3. इसी सुदर्शन चक्र से शिशुपाल सहित अनेक असुरों का अंत हुआ।

अध्याय 15

# सोने की द्वारका

कृष्ण की नगरी को 'सोने की द्वारका' कहा जाता है। बापूजी बताते हैं कि यह द्वारका साधारण ईंट-पत्थरों से नहीं, बल्कि **विश्वकर्मा** द्वारा बनवाई गई थी। विश्वकर्मा सूक्ष्म जगत में रहने वाली एक दिव्य आत्मा हैं, जो अपने संकल्प और आत्मा की शक्ति से सूक्ष्म में महल तथा रचनाएं खड़ी कर देते हैं; बाद में वे रचनाएं स्थूल में प्रकट होती हैं। असुरों और देवताओं के भवन-स्थान भी पहले इसी संकल्प शक्ति से बनते थे। संकल्प शक्ति अर्थात आत्मा की वह शक्ति, जिससे कोई शक्तिशाली आत्मा केवल संकल्प मात्र से रचना प्रकट कर सकती है।

इस द्वारका के निर्माण की प्रक्रिया रोचक है। कृष्ण ने सूक्ष्म जगत में विश्वकर्मा को संकल्प भेजा कि सोने की द्वारका बनाई जाए। विश्वकर्मा ने पहले उसे सूक्ष्म रूप में रचा — जैसा कृष्ण चाहते थे ठीक वैसा ही उसका पूरा स्वरूप मन में साकार कर दिया। वह द्वारका सोने की इसलिए थी, क्योंकि सूक्ष्म में रची गई यह नगरी **परम तत्वों की बनी थी — और परम तत्व सुनहरी आभा से चमकते हैं।**

सागर देवता से कहा गया था कि तुम सागर का पानी हटा दो। उसी समय परम तत्व की सोने की द्वारका बनाई गई। विश्वकर्मा ने एक संकल्प किया और एक संकल्प मात्र से द्वारका बन गई। वह परम तत्व की सोने की द्वारका थी। परम तत्व यानी परम आकाश, परम वायु और परम अग्नि से बनी हुई थी। उसका रंग गोल्डन था, इसलिए उसे सोने की द्वारका कहा जाता था।

ऋषि-मुनियों ने भी उसे देखा था, मगर वे समझ नहीं पाए थे कि यह कौन-सी और कैसी दुनिया है। कोई भी उसे समझ नहीं पाया था।

## द्वारका क्यों बनी?

**कृष्ण मथुरा आए और उन्होंने अपने मामा कंस का वध किया।**

कंस का ससुर जरासंध था। जरासंध बार-बार मथुरा पर हमला करता रहा और कृष्ण बार-बार उसे हराते रहे। कृष्ण ने उसे 17 बार हराया। 18वीं बार जब जरासंध फिर सेना इकट्ठी करके मथुरा पर हमला करने आया, तब कृष्ण ने सोचा कि जब तक मैं यहां रहूंगा, यह बार-बार हमला करता रहेगा और मैं इसे मार नहीं सकता।

बाद में कृष्ण ने भीम के द्वारा जरासंध को मरवाया। जरासंध की कैद से 16,000 रानियों को भी छुड़वाया गया। क्योंकि जरासंध को वरदान था, इसलिए कृष्ण उसे स्वयं नहीं मार सकते थे।

इसके बाद कृष्ण ने विश्वकर्मा से सोने की द्वारका बनवाई और उसमें मथुरावासियों को लाकर बसाया, क्योंकि मथुरा में आधे से ज्यादा लोग कृष्ण को मानते थे। उन मथुरावासियों को रात में उठाकर सोने की द्वारका में लाकर रख दिया गया।

वहां मथुरा जैसा ही शहर बना दिया गया। उनके घर और सब कुछ वैसा का वैसा (same to same) बना दिया गया, जिससे उन्हें यही अनुभूति हुई कि वे मथुरा शहर में ही हैं। उन्हें रातोंरात वहां लाकर रखा गया, ताकि जरासंध के हमले से कृष्ण को मानने वाले मथुरावासियों को बचाया जा सके।

धीरे-धीरे सोने की द्वारका के अंदर ऐसे मनुष्य भी आने लगे जिनकी सोच तमोप्रधान थी। फिर कृष्ण ने 16,108 रूप निकाले और 16,108 रानियों से शादी की। उनसे बच्चे हुए और फिर उन बच्चों के भी बच्चे हुए।

जो मनुष्य सोने की द्वारका में रहने लगे, उनकी नकारात्मक सोच के कारण वहां के परम तत्व धीरे-धीरे तीन तत्वों और फिर स्थूल तत्वों में कन्वर्ट होने लगे।

जैसी सोच होती है, वैसा ही वायुमंडल बन जाता है। मंदिर जैसे धार्मिक स्थानों में शांत वायुमंडल होता है और भीड़ वाली मायावी जगहों में तामसिक वायुमंडल होता है। हमारे संकल्पों के स्पंदन वायुमंडल में जाते हैं और हमारे संकल्पों से ही वायुमंडल नेगेटिव या पॉजिटिव होता है। अशुद्ध संकल्पों से वायुमंडल तामसिक होता है।

पहले विश्वकर्मा द्वारा बनाई गई सोने की द्वारका परम तत्वों की थी। फिर वहां जो लोग आने लगे और रहने लगे, उनके नकारात्मक विचारों से परम तत्वों का वायुमंडल प्रभावित हुआ और परम तत्व स्थूल तत्वों में रूपांतरित होने लगे।

इस प्रकार जो सोने की द्वारका परम तत्व की द्वारका थी, वह स्थूल द्वारका बन गई। स्थूल यानी फिजिकल मैटर, जो इन स्थूल आंखों से दिखाई देता है।

फिर बाद में जब बेहद के परमपिता Almighty की प्रथम रचना (first creation) को पता लगा कि यह काम उल्टा हो गया। स्थूल तत्वों का परिवर्तन करके परम तत्वों की दुनिया बनानी थी। स्थूल जगत (फिजिकल वर्ल्ड) को परम तत्वों (Supreme Elements) की दिव्य दुनिया बनाना था। सबको ज्ञान देकर ऊपर ले जाना था और परम तत्वों की दुनिया बनानी थी, मगर वहां रहने वालों ने परम तत्वों को ही स्थूल तत्वों में कन्वर्ट कर लिया।

परम तत्व स्थूल तत्वों में कन्वर्ट हो गए और कृष्ण अवतार का सारा प्लान फेल हो गया। इसलिए फिर सोने की द्वारका को वाइंड अप कर दिया गया और उसे सागर में डुबो दिया गया। आप सब जानते ही हैं।

तो परिवर्तन का लक्ष्य उस समय भी था।

जो सोने की द्वारका बनाई गई थी, उसके परम तत्व एक कला की पावर-क्वालिटी के परम तत्व थे। एक कला की क्वालिटी का पावर था।

परम लाइट में से जो एक कला की क्वालिटी के परम तत्व बनते हैं, उनकी पावर बहुत कम, ना के बराबर होती है। नेगेटिव सोच होने पर वे परम तत्व तीन तत्वों—परम आकाश, परम वायु और परम अग्नि—में और फिर पांच स्थूल तत्वों में कन्वर्ट हो जाते हैं।

यही हमेशा हर ब्रह्मांड में हुआ है। पहले हर ब्रह्मांड में परम तत्वों की दुनिया बनी। बाद में उन्हीं परम तत्वों से तीन तत्वों की दुनिया बनी और तीन तत्वों से फिर स्थूल दुनिया बन गई। हर ब्रह्मांड में हमेशा ऐसा ही होता है।

बापूजी बताते हैं कि, एक कला की पावर-क्वालिटी कम है। इसलिए ऊपर नीरू (नीरू माँ - जो बेहद के बेहद की कला की आदिशक्ति का रूप हैं) यह रिसर्च वर्क कर रही हैं कि कहां-कहां कितनी कला का पावर डाला जाए। यह रिसर्च वर्क अभी चालू है कि मल्टीवर्स को बदलने के लिए कितनी कला का पावर चाहिए।

क्योंकि पहले एक कला का पावर डालकर प्रयोग किया जा चुका है। कृष्ण अवतार में परिवर्तन क्यों नहीं हुआ? वह परिवर्तन सार्थक क्यों नहीं हुआ? कृष्ण का अवतार परिवर्तन के लिए हुआ था, तो परिवर्तन क्यों नहीं हुआ?

सोने की द्वारका, यानी परम तत्वों की द्वारका भी आखिर स्थूल मिट्टी की बन गई। बाद में उसका विनाश क्यों हुआ? कृष्ण को भी अपने कुल का विनाश क्यों करना पड़ा?

ये सब अति गुह्य और अति सूक्ष्म बातें हैं, जो बापूजी ने बताई हैं। इन्हें समझने के लिए विशाल बुद्धि चाहिए।

## विचारों की शक्ति

यहां बापूजी विचारों की शक्ति को समझाते हैं, क्योंकि विचारों का सीधा असर होता है। जितने अधिक नकारात्मक विचार किए जाते हैं, शरीर पर उतना ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है — यहां तक कि डिप्रेशन तक हो जाता है। इसके विपरीत, जहां लोगों के विचार शुद्ध और अच्छे होते हैं — जैसे मंदिरों में — वहां स्वतः शांति का अनुभव होता है। **इस प्रकार हमारे विचार शरीर पर और वायुमंडल पर प्रभाव डालते हैं।**

बापूजी बताते हैं कि पहले केवल सूक्ष्म जगत था, स्थूल नहीं। ऊपर की सूक्ष्म दुनिया में सब कुछ विचारों से ही रचा जाता था। परंतु जैसे-जैसे आत्माओं की शक्ति इन विचारों में खर्च होती गई, सूक्ष्म शरीर वाली आत्माएं मनुष्य बनती गई — और इसी क्रम में स्थूल दुनिया अस्तित्व में आई। इसका तात्पर्य यह है कि जितने अधिक व्यर्थ या नकारात्मक विचार किए जाते हैं, आत्मा की उतनी ही शक्ति क्षीण होती है। इसलिए व्यर्थ विचारों से बचना और मन को शांत रखना आवश्यक है।

यदि मन शांत न होता हो, तो बापूजी सच्ची परमशांति का योग सीखने का सुझाव देते हैं। योग अर्थात ज्ञान और ध्यान के द्वारा आत्मा का परम से सचेत जुड़ाव। साथ ही वे **'परमशांति' का जाप** करने की प्रेरणा देते हैं। परमशांति अर्थात बेहद की परमशांति — आत्मा की वह मूल अवस्था, जहां एक भी इच्छा या संकल्प नहीं उठता। इस भाव से जाप किया जाता है — मैं परमशांत बन रहा हूं; प्रकृति परमशांत बन रही है; वायुमंडल परमशांत बन रहा है।

इसके पीछे कर्म का एक सुनिश्चित सिद्धांत कार्य करता है — **जो दोगे, वही पाओगे; जितना दोगे, उतना पाओगे।** दुख दोगे, तो दुख पाओगे; सुख दोगे, तो सुख पाओगे। इसी नियम के

अनुसार, यदि यह संकल्प किया जाए कि पूरी प्रकृति और पूरा वायुमंडल परमशांत बन रहे हैं, तो साधक को स्वयं भी परमशांति की प्राप्ति होती है।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **विश्वकर्मा** | सूक्ष्म जगत की दिव्य आत्मा, जो संकल्प शक्ति से सूक्ष्म में रचनाएं खड़ी करती है। |
| **संकल्प शक्ति** | आत्मा की वह शक्ति, जिससे शक्तिशाली आत्मा संकल्प मात्र से रचना प्रकट कर सकती है। |
| **योग** | ज्ञान और ध्यान द्वारा आत्मा का परम से सचेत जुड़ाव। (शब्द सदा 'योग' है।) |
| **परमशांति** | बेहद की परमशांति — आत्मा की वह मूल अवस्था, जहां एक भी इच्छा या संकल्प नहीं उठता। |
| **कर्म का सिद्धांत** | जो दोगे, वही पाओगे; जितना दोगे, उतना पाओगे। |

## इस अध्याय का सार

1. सोने की द्वारका विश्वकर्मा ने संकल्प शक्ति से पहले सूक्ष्म में रची — परम तत्वों की, सुनहरी आभा वाली।
2. लोगों के अशुद्ध विचारों और वाइब्रेशनों से परम तत्वों की द्वारका स्थूल तत्वों में बदल गई।

3. विचारों में आत्मा की शक्ति खर्च होती है — इसलिए व्यर्थ विचार छोड़कर 'परमशांति' का जाप तीन संकल्पों के साथ करना चाहिए।
4. कर्म का सिद्धांत: जो दोगे, वही पाओगे — प्रकृति और वायुमंडल को परमशांति दो, तो परमशांति मिलती है।

अध्याय 16

# 16108 विवाह का सच

▪ ✶ ▪

कृष्ण के जीवन का एक प्रसंग सदा से लोगों के मन में जिज्ञासा जगाता रहा है — उनके सोलह हजार से अधिक विवाह। इसे प्रायः लोग समझ नहीं पाते, परंतु बापूजी इसके पीछे का पूरा सच स्पष्ट करते हैं।

बापूजी बताते हैं कि कृष्ण ने 16108 रूप प्रकट करके 16108 रानियां रखीं। रूप अर्थात सुप्रीम आत्मा द्वारा अपनी ही ऊर्जा से, संकल्प शक्ति से रचा गया अपना प्रतिरूप। उन्होंने ये रूप प्रकट किए — इसका वर्णन कहीं और नहीं मिलता; यह तो नारद जी ने देखा था। नारद जी एक पल में कहीं भी पहुंच सकते थे। वे जब भी, जहां भी रानियों के पास गए, हर बार उन्हें प्रत्येक रानी के साथ कृष्ण उपस्थित दिखाई दिए। कृष्ण ने प्रत्येक रानी के लिए अलग रूप धारण किया था। इस घटना के पीछे की पूरी पृष्ठभूमि इस प्रकार है। एक अत्यंत शक्तिशाली असुर था जरासंध, जरासंध की कैद से 16,000 राजकुमारियों को छुड़वाया, जिसने बंदी बना रखा था और उन पर अनेक अत्याचार किए थे।

कृष्ण ने उन सोलह हजार राजकुमारियों को उस असुर के बंधन से मुक्त कराया। परंतु मुक्त होने पर राजकुमारियों ने कहा कि इस असुर ने उन्हें बंदी बनाकर उनके साथ अन्याय किया है, और अब समाज उन्हें स्वीकार नहीं करेगा; इसी पीड़ा में उन्होंने आत्महत्या तक की बात कही। तब कृष्ण ने अपने जैसे  सोलह हजार रूप प्रकट किए और उन सोलह हजार राजकुमारियों से विवाह कर लिया — ताकि उनकी रक्षा और सम्मान बना रहे।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **रूप** | सुप्रीम आत्मा द्वारा अपनी ही ऊर्जा से, संकल्प शक्ति से रचा गया अपना प्रतिरूप। |

## इस अध्याय का सार

1. कृष्ण ने 16108 रूप प्रकट कर 16108 रानियां रखीं — यह नारद जी ने देखा, जो एक पल में कहीं भी पहुंच सकते थे।
2. एक शक्तिशाली असुर ने सोलह हजार राजकुमारियों को बंदी बनाकर उन पर अत्याचार किए थे; कृष्ण ने उन्हें मुक्त कराया।
3. समाज के अस्वीकार और आत्महत्या की बात पर कृष्ण ने सोलह हजार रूप प्रकट कर उन सबसे विवाह किया — उनकी रक्षा के लिए।

## सागर पी जाने वाले ऋषि

एक और प्रसिद्ध कथा है, जिसे बापूजी विज्ञान की दृष्टि से समझाते हैं।एक ऋषि-मुनि हुए थे। उस समय असुर रात में देवताओं को परेशान करते और दिन में सागर में छिप जाते थे। तब उन ऋषि-मुनि ने पूरे सागर का जल ही पी लिया। यह कैसे संभव हुआ? बापूजी के अनुसार यह कोई असंभव बात नहीं है। जो ब्रह्मांड बना है, वह एक कला की पावर से बना है, और वे ऋषि-मुनि भी हाई क्वालिटी की आत्मा थे। उन्होंने अपनी योग की दृष्टि डाली और उस दृष्टि से जल को वायु तत्व में रूपांतरित किया; फिर वायु को आकाश तत्व में रूपांतरित किया। आकाश तत्व अर्थात पांच तत्वों

में सबसे सूक्ष्म तत्व। अंत में उसे एक सेल — कोशिका — में परिवर्तित करके अपने भीतर समा लिया।

अध्याय 17

# देवता धरती पर आते थे

हमारे देवी-देवताओं से जुड़ी असंख्य कथाएं प्रचलित हैं, और बापूजी के अनुसार वे सब सत्य हैं। देवी-देवता तीसरे लोक — **स्वर्ग लोक** — में निवास करते हैं। स्वर्ग लोक अर्थात धरती से तीसरा ऊंचा लोक — देवताओं की दुनिया।

बापूजी कहते हैं कि आज का मनुष्य इन कथाओं को सहज नहीं समझ पाता, क्योंकि समय बदल चुका है और अब वैसे चमत्कार पुनः नहीं हो पा रहे — कोई भी मनुष्य उन्हें नहीं कर पा रहा। संभवतः इसी कारण कुछ लोगों को यह सब असत्य प्रतीत होता है। बापूजी इस विषय में आग्रह नहीं करते — **हर किसी को उसकी अपनी समझ पर छोड़ देते हैं।** परंतु वे यह अवश्य कहते हैं कि जो सनातन ज्ञान है, वह सदा सत्य ही रहता है। **"सनातन अर्थात सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा वह शाश्वत सत्य, जो अनादि है और सदैव विद्यमान रहता है।"**

इसी संदर्भ में एक प्रसिद्ध प्रसंग आता है। तीसरे लोक से — अर्थात इंद्रलोक से — नृत्य करने वाली दिव्य स्त्रियां धरती पर आती थीं। इन्हीं में से एक, मेनका ने, विश्वामित्र का तप भी भंग करा दिया था और फिर संतान को जन्म देकर वह पुनः ऊपर लौट गई। बापूजी बताते हैं कि देवता धरती पर आते थे और यहां मनुष्य का रूप धारण कर लेते थे।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **स्वर्ग लोक (तीसरा लोक)** | धरती से तीसरा ऊंचा लोक — देवताओं की दुनिया। |
| **सनातन** | सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा — शाश्वत। |

## इस अध्याय का सार

1. देवी-देवता तीसरे लोक — स्वर्ग लोक — में रहते हैं; उनकी सारी कथाएं सत्य हैं।
2. इंद्रलोक की नृत्य करने वाली दिव्य स्त्रियां धरती पर आती थीं; मेनका ने विश्वामित्र जैसे तपस्वी का तप भी भंग करा दिया।
3. देवता धरती पर मनुष्य का रूप धारण कर आते थे — और सनातन ज्ञान सदा सत्य रहता है।

अध्याय 18

# महाभारत क्यों हुआ?

**महाभारत युद्ध: धर्म और अधर्म का महासंग्राम**

महाभारत का युद्ध, जो आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व द्वापर युग के अंत में लड़ा गया, केवल एक पारिवारिक संघर्ष नहीं था, बल्कि वह **धर्म और अधर्म के बीच का एक निर्णायक युद्ध था**। यह युद्ध कौरवों और पांडवों के बीच घटित हुआ, इस युद्ध के पीछे का मुख्य कारण उन **आसुरी प्रवृत्ति वाली आत्माओं का विनाश करना था**, जो अधर्म के मार्ग पर चल रही थीं।

युद्ध की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि दुर्योधन और दुशासन जैसे पात्र अपनी आसुरी सोच और व्यवहार को बदलने के लिए तैयार नहीं थे। कृष्ण ने अर्जुन को यह परामर्श दिया था कि इन लोगों का अंत आवश्यक है, क्योंकि मृत्यु के पश्चात ही इन आत्माओं को **पुनर्जन्म के माध्यम से एक नया अवसर मिलेगा** ताकि वे भविष्य में अच्छे मनुष्यों के रूप में धरती पर आ सकें और सुधार कर सकें। इस युद्ध में द्रोपदी जैसे पात्र भी एक निमित्त (कारण) बने, जिससे इस भीषण संघर्ष की भूमिका तैयार हुई।

हालाँकि, बाहरी तौर पर यह भूमि और अधिकारों की लड़ाई थी, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह **ज्ञान और अज्ञान का युद्ध था**। यह युद्ध 'ऑलमाइटी अथॉरिटी' (सर्वोच्च सत्ता) के लिए एक प्रकार का 'टेस्टिंग' (परीक्षण) भी था, जो इस ब्रह्मांड और धरती की परिस्थितियों का अवलोकन कर रहे थे। यह युद्ध इस सत्य को रेखांकित करता है कि जब समाज में अधर्म अपनी सीमाएं लांघने लगता है और आत्माएं स्व-परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होतीं, तब प्रकृति और ईश्वरीय सत्ता को हस्तक्षेप करना पड़ता है।

जिस उद्देश्य से ऑलमाइटी अथॉरिटी धरती पर पधारे थे — संसार को बदलने — वह लक्ष्य निरीक्षण (Observation) करते-करते भी पूरा नहीं हो सका। इसी विवशता में महाभारत जैसा महायुद्ध हुआ।

बापूजी एक महत्वपूर्ण बात स्पष्ट करते हैं — कृष्ण **महाभारत का युद्ध नहीं चाहते थे, फिर भी उन्हें वह करना पड़ा।** इस युद्ध में जो असंख्य आत्माएं मारी गईं, वे भूत बनकर कितनी दुखी हुईं! बापूजी कहते हैं — कल्पना कीजिए, कितने लोग मारे गए होंगे; पूरी 18 अक्षौहिणी सेना इस युद्ध में समाप्त हुई। अक्षौहिणी अर्थात सेना गिनने की प्राचीन इकाई। और परिणाम यह हुआ कि महाभारत के पश्चात संसार की स्थिति और भी बिगड़ गई।

कृष्ण के मार्गदर्शन में कौरवों और पांडवों के बीच जो युद्ध हुआ, वह धर्म की स्थापना के लिए था, किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो **आज का महाभारत एक सूक्ष्म युद्ध है, जो नकारात्मक और सकारात्मक संकल्पों तथा वाइब्रेशनों के बीच लड़ा जा रहा है**। आज की दुनिया में धर्म के नाम पर होने वाले युद्ध वास्तव में अधर्म का ही रूप ले चुके हैं, क्योंकि वास्तविक धर्म शांति और सुख सिखाता है, न कि विस्तारवाद या जबरदस्ती थोपे गए विचार।

इतिहास गवाह है कि पिछले 5000 वर्षों में अनगिनत युद्ध हुए, फिर भी दुनिया में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं आया। इसका मुख्य कारण यह है कि **स्थूल युद्धों से कभी भी आत्मा का संस्कार**

**परिवर्तन नहीं होता**। महाभारत जैसे विनाशकारी युद्धों में जब आत्माएं तड़पती हुई शरीर छोड़ती हैं, तो उनकी सद्गति नहीं, बल्कि दुर्गति होती है। वे ही अतृप्त और अज्ञानी आत्माएं सूक्ष्म जगत में हाहाकार मचाती हैं और पुनः जन्म लेकर अपने पुराने आसुरी संस्कारों के साथ समाज में अव्यवस्था फैलाती हैं। अतः विनाश यदि करना ही है, तो शस्त्रों से नहीं, बल्कि **अज्ञान रूपी अंधेरे का विनाश दिव्य ज्ञान से करना होगा**।

आज के युग में **'अर्जुन' वह ज्ञानी आत्मा है जो इस मायावी दुनिया में रहते हुए स्वयं को भीतर से झांकती है** और मोह के बंधनों को पहचानकर 'थ्योरी ऑफ कर्म' को समझने का प्रयास करती है। आधुनिक अर्जुन ३३ कोटि देवी-देवताओं की भक्ति में उलझने के बजाय उस 'ऑलमाइटी अथॉरिटी' (सर्वोच्च सत्ता) की खोज में निकलता है जो पूरे मल्टीवर्स का स्वामी है। उसकी शक्ति उसकी उच्च गुणवत्ता वाली आत्मा और आत्म-स्वरूप की स्मृति में निहित है। वह मौन रहकर केवल अपना कल्याण नहीं करता, बल्कि **स्व-परिवर्तन के माध्यम से विश्व कल्याण की भावना रखता है**।

वास्तविक युद्ध मनुष्य का अपने आप से है, जहाँ उसे अपनी वासनाओं और अज्ञान पर विजय पानी है। जब एक आत्मा आत्म-स्वरूप में स्थित होकर सर्वोच्च सत्ता से योग लगाती है, तो वह 'स्थितप्रज्ञ' अवस्था को प्राप्त करती है। ऐसी आत्मा के ओरा (Aura) से **परमशांति के वाइब्रेशन निकलते हैं, जो न केवल उसके घर के वातावरण को बल्कि पूरे वायुमंडल को बदलने की शक्ति रखते हैं**।

आज का महाभारत ज्ञान और अज्ञान का युद्ध है, जहाँ जीत केवल सत्य ज्ञान और सकारात्मक संकल्पों की ही होगी। स्थूल लड़ाई-झगड़े किसी भी समस्या का समाधान नहीं हैं; **परम सत्य ज्ञान देना और आत्म-स्वरूप की अनुभूति कराना ही आज का 'महादान' है**। इस सूक्ष्म युद्ध में विजय पाने के लिए मनुष्य को जीवात्मा से पुनः शुद्ध आत्मा बनकर निर्विकारी होने की आवश्यकता है,

जिससे वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे विकारों को जीतकर विश्व में शांति स्थापित कर सके

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **अक्षौहिणी** | सेना गिनने की प्राचीन इकाई। |

## इस अध्याय का सार

1. ऑलमाइटी अथॉरिटी संसार को बदलने आए थे, परंतु ऑब्जरवेशन करते-करते भी वह लक्ष्य पूरा नहीं हो सका।
2. कृष्ण महाभारत नहीं चाहते थे — फिर भी उन्हें युद्ध करना पड़ा; पूरी 18 अक्षौहिणी सेना समाप्त हुई।
3. मारी गई आत्माएं भूत बनकर बहुत दुखी हुईं; महाभारत के बाद संसार की स्थिति और बिगड़ गई।

अध्याय 19

# मुक्ति और जीवन मुक्ति का निर्णय

महाभारत के पश्चात एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया — **मुक्ति और जीवन मुक्ति का निर्णय।** बापूजी इसे स्पष्ट करते हैं।

निर्णय यह था कि मल्टीवर्स में जो कमजोर आत्माएं हैं, उन्हें मुक्ति दे दी जाए, और जो हाई क्वालिटी आत्माएं हैं, उन्हें जीवन मुक्ति दी जाए। अर्थात बेहद की आत्माओं को जीवन मुक्ति, और शेष सबको मुक्ति। मुक्ति अर्थात रचयिता में विलीन हो जाना — रचना में फिर न रहना। और जीवन मुक्ति अर्थात जीते-जी सब कर्म-खातों से मुक्त हो जाना।

इसका गहरा अर्थ बापूजी इस प्रकार समझाते हैं। जब स्थूल तत्वों की यह दुनिया परम तत्वों में परिवर्तित होगी, तब कमजोर आत्माएं परम तत्वों और परम प्रकाश में विलीन हो जाएंगी। और जो हाई क्वालिटी आत्माएं उस पावर को सहन कर सकती हैं — पचा सकती हैं — उनका परिवर्तन होगा। उसके पश्चात कहीं भी स्थूल शरीर या स्थूल दुनिया शेष नहीं रहेगी। तब केवल परम तत्वों की दिव्य दुनिया होगी, और आत्माओं के परम तत्वों के दिव्य शरीर होंगे। **वहां कभी मृत्यु नहीं होगी — यह अमर दुनिया, अर्थात अमर लोक, बन जाएगी।**

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **मुक्ति** | रचयिता में विलीन हो जाना — रचना में फिर न रहना। |
| **जीवन मुक्ति** | जीते-जी सब कर्म-खातों से मुक्त हो जाना। |

## इस अध्याय का सार

1. महाभारत के बाद निर्णय: मल्टीवर्स की कमजोर आत्माओं को मुक्ति; हाई क्वालिटी — बेहद की — आत्माओं को जीवन मुक्ति।
2. स्थूल दुनिया परम तत्वों में बदलेगी; कमजोर आत्माएं परम प्रकाश में विलीन होंगी; पावर पचाने वाली आत्माओं का परिवर्तन होगा।
3. फिर कहीं स्थूल शरीर नहीं रहेगा — परम तत्वों के दिव्य शरीर, दिव्य दुनिया, और मृत्यु कभी नहीं — अमर लोक।

अध्याय 20

# बेहद ज्ञान से विश्व परिवर्तन

इस समस्त परिवर्तन को साकार रूप देने के लिए ऑलमाइटी अथॉरिटी अभी भी कार्यरत हैं। बापूजी बताते हैं कि वे गुप्त वेश में भी कार्य कर रहे हैं, और साकार रूप में भी।

परंतु उन्हें जानने के लिए **ज्ञान सागर** में उतरना पड़ता है। ज्ञान सागर अर्थात परम आध्यात्मिक ज्ञान का विशाल सागर। इसके लिए बेहद का सोच रखना होगा, बेहद का ज्ञान होना चाहिए, और यह विचार करना होगा कि बेहद का विश्व कितना विशाल है। जब यह समझ आ जाती है, तब व्यक्ति स्वयं ही निर्णय कर सकता है — क्या गलत है और क्या सही है (व्हाट इज़ रॉन्ग एंड व्हाट इज़ राइट)। बापूजी के अनुसार ज्ञान से ही प्रकाश है; **वेद का अर्थ ही ज्ञान है** — जैसे सूर्य की रोशनी होती है, वैसे ही ज्ञान का प्रकाश होता है।

## यह ज्ञान सबको दें

अंत में बापूजी एक भविष्यवाणी और एक प्रेरणा देते हैं। **विश्व परिवर्तन बहुत जल्दी होने वाला है।** विश्व परिवर्तन अर्थात स्थूल तत्वों की इस मर्त्य दुनिया को परम तत्व और परम प्रकाश की अमर दुनिया में बदलने का महा मिशन। इसीलिए बापूजी के अनुसार सभी बेहद की आत्माओं को यह ज्ञान सुनकर आगे — दूसरों तक — पहुंचाना चाहिए।

## शब्द-दीप

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| **ज्ञान सागर** | परम आध्यात्मिक ज्ञान का विशाल सागर। |

| शब्द | अर्थ |
| --- | --- |
| **विश्व परिवर्तन** | स्थूल तत्वों की मर्त्य दुनिया को परम तत्व–परम प्रकाश की अमर दुनिया में बदलने का महा मिशन। |

## इस अध्याय का सार

1. इस परिवर्तन के लिए ऑलमाइटी अथॉरिटी अभी गुप्त वेश में — और साकार में भी — कार्यरत हैं।
2. उन्हें जानने के लिए ज्ञान सागर में उतरना होगा; बेहद का सोच रखने पर व्यक्ति स्वयं सही-गलत का निर्णय कर सकता है।
3. ज्ञान से ही प्रकाश है — वेद का अर्थ ही ज्ञान है; विश्व परिवर्तन बहुत जल्दी है, अतः यह ज्ञान सबको देना चाहिए।

परिशिष्ट

# शब्दावली

इस पुस्तक में आए बेहद ज्ञान के मुख्य शब्द और उनके सरल अर्थ —

**अकर्ता भाव** — 'मैं कर्ता हूं' के भाव का पूर्ण समर्पण — कर्तापन से मुक्त अवस्था।

**अक्षौहिणी** — सेना गिनने की प्राचीन इकाई।

**अनंत कोटि** — अनंत करोड़; एक अगणनीय संख्या।

**अमर लोक** — अमर लोक; परम तत्व से बना वह लोक जहाँ स्थूल मृत्यु नहीं होती। जन्म और मृत्यु से परे अस्तित्व की एक अवस्था।

**अवतार** — यह किसी परम आत्मा या उच्च आयाम की आत्मा का एक अंश है, जिसका उपयोग पृथ्वी पर किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए किया जाता है। उस अंश में परम आत्मा की ऊर्जा होती है, परंतु रूप/क्लोन की तुलना में उसमें कम ऊर्जा होती है। जैसे विष्णु के पृथ्वी पर राम, परशुराम आदि अवतार हैं।

**अव्यक्त** — अप्रकट। जो स्थूल भौतिक रूप में अभिव्यक्त नहीं है। अव्यक्त उन लोकों, ऊर्जाओं, चेतनाओं या सत्ताओं को कहते हैं जो साधारण भौतिक दृश्यता से परे विद्यमान हैं। बापूजी की शिक्षाओं में यह विशेष रूप से उच्च आध्यात्मिक चेतना, सूक्ष्म अस्तित्व और स्थूल भौतिक जगत से परे की वास्तविकताओं को इंगित करता है।

**आकारी** — यह आत्मा का सूक्ष्म रूप है। यह ऊर्जा से रचा गया रूप है। यह रूप सूक्ष्म होने के कारण हमारी स्थूल आँख से दिखाई नहीं देता। आत्मा परम तत्वों से बना एक सूक्ष्म रूप धारण करती है। इस सूक्ष्म रूप को 'आकारी' कहते हैं।

**आकाश तत्व** — पांच तत्वों में सबसे सूक्ष्म तत्व — आकाश तत्व (ईथर एलिमेंट)।

**आकाशगंगा** — मिल्की वे — हमारी आकाशगंगा। आकाशगंगा का अर्थ है 'आकाश की नदी'। यह हमारी galaxy, अर्थात् मिल्की वे की ओर संकेत करती है — जो एक लाख प्रकाश-वर्ष तक फैली है और जिसमें अरबों तारे हैं। इस समझ में प्रत्येक तारा एक सौरमंडल (solar system) के तुल्य है। सृष्टि में ऐसी अनंत आकाशगंगाएँ हैं।

**आत्म स्वरूप** — (सोल कॉन्शसनेस) आत्मा के मूल स्वभाव में स्थित होने की अवस्था। यह वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति शरीर के बजाय पूर्ण रूप से आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है; यही आध्यात्मिक साधना / ज्ञान की नींव है। जब साधक आत्म स्वरूप को प्राप्त करता है, तब आत्मा का मूल प्रकाश, शांति और शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाते हैं। ब्रह्म स्वरूप इसी अवस्था की वैश्विक अभिव्यक्ति है — आत्मा का अपनी पूर्ण ब्रह्मांडीय पहचान में स्थित होना।

**ऑब्जरवेशन** — साक्षी बनकर, बिना लगाव, सब कुछ देखना।

**ऑलमाइटी अथॉरिटी** — (परमेश्वरीय परम सत्ता) बेहद (असीम) लोक के परम रचयिता; संपूर्ण मल्टीवर्स की सर्वोच्च सत्ता। शक्ति का परम स्रोत। समस्त आत्माओं के परदादा के परदादा के रूप में भी वर्णित।

**ऊंच ते ऊंच परमधाम** — सब धामों से ऊंचा धाम — ऑलमाइटी अथॉरिटी का निवास।

**कर्ता भाव** — 'मैं कर रहा हूं' का भाव — जिसके छूटने पर अकर्ता भाव आता है।

**कर्म का सिद्धांत** — जो दोगे, वही पाओगे; जितना दोगे, उतना पाओगे।

**कर्म बंधन** — कर्म का बंधन; संचित विगत कर्मों से उत्पन्न उलझाव।

**कर्मातीत अवस्था** — कर्म से परे; वह अवस्था जिसमें आत्मा विगत कर्मों के बंधन से मुक्त होती है। कर्म-प्रभाव से परे की अवस्था, जब नकारात्मकता भस्म हो जाती है और कारण शरीर पूर्ण रूप से आवेशित हो जाता है। आत्मा को समस्त कर्म-बंधनों से मुक्ति मिल गई होती है।

**कला** — कला आत्मा की शक्ति का माप-मात्रक है। जैसे पृथ्वी पर हम विद्युत शक्ति को 'वॉट' से मापते हैं, अर्थात् वह किसी विद्युत उपकरण की क्षमता है, वैसे ही अध्यात्म में 'कला' का अर्थ है किसी रचयिता या आत्मा की क्षमता। अंतरिक्ष में अनेक रचयिता हैं, अतः उनकी शक्ति का परिमाण अलग-अलग होता है, जिसे हम विभिन्न दिव्य कोटि या कला की शक्ति कहते हैं।

**कारण जगत** — वह दुनिया, जहां केवल आकाश तत्व है।

**गुप्त वेश** — छिपा हुआ रूप — छिपकर, गुप्त रीति से काम करना।

**जी2 (G2)** — ग्रेट-ग्रेट यूनिवर्स — यूनिवर्स से दो सीढ़ी ऊपर की रचना।

**ज्ञान सागर** — ज्ञान का सागर; परम आध्यात्मिक ज्ञान की असीम गहराई का प्रतीक या अनंत आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत।

**ज्योतिर्लिंग** — ज्योति (प्रकाश) का लिंग (रूप); निराकार शिव का मूल प्रतीक, जो हीरे से बना है।

**जीवन मुक्ति** — अपने रचयिता के संपूर्ण ज्ञान के साथ, समस्त कर्म-खातों से मुक्ति। आत्मा अपने रचयिता की आनंदमय अवस्था में शाश्वत रूप से विद्यमान रहती है। जीते-जी मुक्ति; जीवनकाल में ही प्राप्त आध्यात्मिक स्वतंत्रता की अवस्था।

**तपस्या** — आध्यात्मिक तप। यह गहन-तीव्र आध्यात्मिक तप और अनुशासन है जो अनेक जन्मों तक निरंतर बना रहता है। तपस्या आत्मा को विषय-विकारों से शुद्ध करती है और बुद्धि को उस ज्ञान को ग्रहण करने के लिए तैयार करती है जिसे साधारण मन धारण नहीं कर सकता।

**तीसरा लोक (स्वर्ग लोक)** — धरती से तीसरा ऊंचा लोक — देवताओं की दुनिया। स्वर्गिक लोक; चौदह-स्तरीय ब्रह्मांडीय संरचना के भीतर एक दिव्य आयाम। सौरमंडल के भीतर भौतिक संसार से ऊपर सृष्टि का एक उच्चतर आयाम।

**त्रिदेव** — तीन ब्रह्मांडीय देव: ब्रह्मा, विष्णु और शंकर।

**दिव्य दृष्टि** — आत्मा की वह क्षमता जिससे वह बाहरी नेत्रों की पहुँच से परे की वास्तविकताओं को देख सकती है।

**देवता** — एक देव; उच्च लोकों में तीन-तत्वीय शरीर में विद्यमान एक सत्ता।

**निराकार / निराकारी** — यह आत्मा की निराकार अवस्था है। यह आत्मा की वह सच्ची दिव्य अवस्था है जब आत्मा दिव्य प्रकाश के रूप में होती है। इसे आत्मा की निराकार (इन्कॉर्पोरियल) अवस्था भी कहते हैं। इस अवस्था में आत्मा को परम आत्मा कहा जाता है। यह आत्मा की परम अवस्था है। इस पवित्रता वाली निराकार आत्मा को ही उचित रूप से परमात्मा कहा जाता है और वह सीधे परम धाम को आरोहण करती है।

**निर्विकारी** — विकारों से मुक्त; इच्छा, क्रोध, लोभ, आसक्ति और अहं से परे की पवित्र अवस्था।

**निष्काम कर्म** — फल की कामना छोड़कर, परमात्मा की याद में किया हुआ कर्म।

**परब्रह्म** — वाणी के अनुसार — कई लोग ब्रह्मांड के शिव निराकार को 'परब्रह्म' कहते हैं, जो परमधाम में रहते हैं।

**परम अग्नि** — उन तीन परम तत्वों में से एक जिनसे शिवपुरी में कारण शरीर बनता है।

**परम तत्व** — पाँच मूल तत्वों का शुद्ध, उन्नत रूप। उच्चतर वास्तविक सृष्टियों का मूल पदार्थ। जैसे नाभिक परमाणु से सूक्ष्म है, वैसे ही परम तत्व तत्व से सूक्ष्म है। परम तत्व की ऊर्जा तत्व की तुलना में कहीं अधिक होती है। परम आकाश, परम वायु और परम अग्नि — ये तीन परम तत्व हैं।

**परम प्रकाश (परम लाइट)** — परम प्रकाश; दिव्य तेज का शुद्धतम रूप। उच्चतम आध्यात्मिक प्रकाश और शक्ति। परम तेजोमय सार। यह शुद्ध आत्म-चेतना की अवस्था है।

**परम महा ब्रह्मांड** — एक यूनिवर्स — (universe)। वह विशाल संरचना जिसके भीतर आकाशगंगाएँ समाहित हैं।

**परम महा शिव** — एक ब्रह्मांड (परम महा ब्रह्मांड) के निराकार रचयिता। वे ब्रह्मांड के परम धाम में निवास करते हैं; महाशिव से ऊपर की परम सत्ता। समस्त महाशिवों के रचयिता।

**परम परम महा शिव** — ग्रेट यूनिवर्स (G1) के रचयिता।

**परमशांति** — आत्मा की मूल अवस्था। परमशांति केवल शोर या संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है। यह आत्मा की वह मूल अवस्था है जब वह अपने शुद्ध दिव्य प्रकाश रूप में स्थित होती है। यह एक जीवंत अवस्था भी है और एक स्पंदन भी, जिसे बाहर की ओर विकीर्ण किया जा सकता है। इसीलिए आत्मा सदा परमशांति की खोज करती है। यह वह अवस्था है जब आत्मा अपने शुद्ध दिव्य निराकार परम प्रकाश रूप में स्वयं को स्थापित कर लेती है।

**परमधाम** — हर रचयिता का निराकार धाम; आत्माओं का मूल घर।

**परमात्मा** — आत्माओं के रचयिता। अपने सच्चे निराकार दिव्य प्रकाश रूप में, अपार शक्ति वाली आत्मा संकल्प द्वारा अन्य आत्माओं को रच सकती है। एक सौरमंडल के रचयिता शिव को परमात्मा कहते हैं। निराकारी अवस्था में आत्मा और परम आत्मा के बीच कोई वास्तविक भेद नहीं होता।

**पाताल** — वे सात अधोलोक जिनमें आत्माएँ तब गिरती हैं जब वे अपनी शक्ति खो देती हैं और पापमय कर्म करती हैं।

**पुष्पक विमान** — प्राचीन शास्त्रों का प्रसिद्ध उड़ने वाला रथ; इस भूमि के प्राचीन महाकाव्यों में वर्णित सूक्ष्म लोक का एक वाहन। — रावण इसके स्वामी थे।

**प्रलय (पांच प्रकार)** — रचना का सिमटना — अर्ध प्रलय, प्रलय, कल्प प्रलय, महाकल्प प्रलय, महाकाल प्रलय।

**बेहद** — अनंत — समस्त सीमाओं से परे या बिना किसी सीमा के। बापूजी के ज्ञान में बेहद का तात्पर्य सृष्टि के अनंत, असीम आयामों से है। प्रमुख शब्द: बेहद की आत्मा (असीम आत्मा), बेहद ज्ञान (अनंत ज्ञान), बेहद सेवा (असीम सेवा), बेहद का कर्म (अविनाशी कर्म)।

**बेहद की आत्मा** — अनंत शक्ति वाली एक ब्रह्मांडीय आत्मा। बेहद का अर्थ है सीमाओं से परे। बेहद की आत्माएँ अपार शक्ति वाली आत्माएँ हैं, जो परम दिव्य प्रकाश से बनी हैं। उन्होंने

आकाशगंगाओं, ब्रह्मांडों और सृष्टि के विशाल आयामों की यात्रा की है। वे एक विशेष उद्देश्य से पृथ्वी पर आती हैं: ज्ञान का संप्रेषण करने और मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए।

**ब्रह्मांड** — हमारा सौरमंडल (solar system) — सृष्टि की एक इकाई। बापूजी के ज्ञान में, ब्रह्मांड विशेष रूप से एक सौरमंडल को इंगित करता है — शिव द्वारा रचा गया एक संसार। एक ही आकाशगंगा के भीतर ऐसे असंख्य ब्रह्मांड हैं। हमारा अपना सौरमंडल ही हमारा ब्रह्मांड है। प्रत्येक ब्रह्मांड का एक कला-माप होता है।

**ब्रह्मापुरी / विष्णुपुरी / शिवपुरी** — ब्रह्मांड के ऊंचे धाम — ब्रह्मा, विष्णु और शिव-शक्ति के लोक।

**शिवपुरी** — शिव-शक्ति का धाम; विष्णुपुरी के ऊपर और परम धाम के नीचे स्थित। शिव और शक्ति का लोक — आदि शक्ति का, जिन्हें माँ दुर्गा भी कहते हैं — जिनसे ब्रह्मा, विष्णु और शंकर प्रकट होते हैं। शिवपुरी मूल वतन है, वह धाम जिसमें आत्मा सर्वप्रथम आकारी (रूप-आधारित) अवस्था धारण करती है; यहाँ शरीर सौ प्रतिशत परम तत्व का होता है।

**विष्णुपुरी / वैकुंठ**—भगवान विष्णु का लोक / परम धाम, शिवपुरी के लोक से नीचे। ज्यों ही आत्मा इस लोक में प्रवेश करती है, कारण शरीर के परम तत्वों का पचास प्रतिशत भाग तीन स्थूल तत्वों से प्रतिस्थापित हो जाता है; इसी बिंदु पर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर को ढकना आरंभ करता है।

**ब्रह्मापुरी**— ब्रह्मा का धाम; ब्रह्मांड के भीतर एक दिव्य लोक।

**ब्लैक डॉट** — ऊंच ते ऊंच परमधाम से देखने पर हमारा मल्टीवर्स — परम प्रकाश

घटने से काला बिंदु जैसा।

**भक्ति मार्ग** — भक्ति-उपासना का पथ।

**मल्टीवर्स** — वह ब्रह्मांडीय स्तर जिसमें अनेक ब्रह्मांड (Universes), महान ब्रह्मांड (Great Universes), महान-महान ब्रह्मांड से लेकर G17 तक के ब्रह्मांड-स्तर समाहित हैं। सृष्टि की रचना इससे भी आगे फैली है, मानव मन की सहज समझ से परे।

**महा ब्रह्मांड** — एक आकाशगंगा (galaxy)। हमारा अपना महा ब्रह्मांड मिल्की वे है।

**महा परमधाम** — प्रत्येक आकाशगंगा के केंद्र में स्थित महान परम धाम; महा-शिव का धाम। विज्ञान प्रायः इसे एक सुपरमैसिव ब्लैक होल मानकर भ्रमवश पहचानता है।

**महा शिव** — एक आकाशगंगा (galaxy) के स्वामी और शिव से ऊपर की परम सत्ता, जो एक ही संकल्प में अनंत शिवों को प्रकट करने में सक्षम हैं। महाशिव का एक क्षण ब्रह्मा के सौ वर्षों के बराबर होता है।

**महाकारण जगत** — कारण से भी सूक्ष्म आयाम — महाकारण शरीर की दुनिया।

**महाकाल** — ब्रह्मांड के परम रचयिता और संहारक। महाशिव महाकाल एक संपूर्ण ब्रह्मांड (परम महा ब्रह्मांड) के परम रचयिता हैं। महाकाल के रूप में — ब्रह्मांडीय काल के स्वामी — वे ही हैं जो महाकाल प्रलय के समय समस्त सृष्टि को पुनः अपने में विलीन कर लेते हैं। केवल 16–20 कला वाली ब्रह्म ऋषि आत्माएँ ही इस प्रलय से बच पाती हैं।

**मुक्ति** — स्वतंत्रता; जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति। मोक्ष के समान। वह अवस्था जब आत्मा सृष्टि में नहीं रहती। वह अपने रचयिता में विलीन हो जाती है।

**मृत्यु लोक** — मृत्यु का संसार। आत्मा, उच्च लोकों से उतरकर, पाँचों तत्वों से बना शरीर धारण करती है। यह पृथ्वी, यह स्थूल अस्तित्व, मृत्यु लोक है — मृत्यु का लोक। यहाँ सब कुछ अस्थायी है। मृत्यु लोक में जीवन का उद्देश्य इसे एक सेतु की तरह उपयोग करना है: मृत्यु लोक से अमर लोक (अमर लोक, परम धाम) तक की यात्रा करना। इसे समझना संसार के साथ व्यक्ति के संबंध को पूर्णतः रूपांतरित कर देता है।

**योग** — ज्ञान और ध्यान के माध्यम से आत्मा का परम आत्माओं या ऑलमाइटी अथॉरिटी के साथ सचेत संबंध, जिसके माध्यम से आत्मा के अस्तित्व में शक्ति खींची जाती है। (टिप्पणी: बापूजी इसे 'योग' कहकर ठीक करते हैं, 'योगा' नहीं।)

**रिकॉर्ड** — घटित हुए का संचित अंकन — सब कुछ आत्मा में अपने आप अंकित होता है। सृष्टि और चेतना के भीतर विगत घटनाओं का संचित संस्कार।

**रुद्र** — रुद्र माना शंकर; हनुमान जी ग्यारहवें रुद्र के अवतार हैं।

**रूप** — किसी आत्मा का एक क्लोन, जिसे कोई परम आत्मा संकल्प द्वारा अपनी ही ऊर्जा से रचती है। यह परम आत्मा की मूल शक्ति को घटा देता है।

**लोक** — अस्तित्व का एक आयाम या स्तर। लोक का अर्थ है संसार या धाम। वे स्तरीय क्षेत्र जिनसे होकर आत्माएँ अपनी ब्रह्मांडीय यात्रा में नीचे उतरती और ऊपर आरोहण करती हैं। प्रत्येक सौरमंडल के भीतर 14 लोक।

**विचार सागर मंथन** — विचारों के सागर का मंथन — गहरा चिंतन।

**विराट रूप** — बेहद का रूप — जिसमें अनंत कोटि ब्रह्मांड दिखाए गए।

**विश्व परिवर्तन** — विश्व-परिवर्तन; मृत्यु संसार को अमर संसार में बदलने का महान अभियान।

**विश्वकर्मा** — सूक्ष्म जगत की दिव्य आत्मा, जो संकल्प शक्ति से सूक्ष्म में रचनाएं खड़ी करती है।

**विष्णु** — वह दिव्य सत्ता जो शिव-शक्ति से प्रकट हुई; पालन और संरक्षण का ब्रह्मांडीय सिद्धांत।

**व्यक्त** — पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया।

**शंकर** — त्रिदेव में से एक — विनाश की शक्ति; शिव के अवतार, इसीलिए शिव-शंकर एक माने जाते हैं। वह देव जो पार्वती के साथ कैलाश पर निवास करते हैं। बेहद ज्ञान में, शंकर सौरमंडल के भीतर पालक और परिवर्तक हैं।

**शरण (समर्पण)** — अपना मैं-पन और देह-भान छोड़कर अपने आप को परमात्मा को सौंप देना।

**शास्त्र** — वे ग्रंथ, जिनमें आत्मा और रचना की बातें कही गई हैं। हिंदू ग्रंथ है जहाँ आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा होती है।

**शिव** — एक ब्रह्मांड (सोलर सिस्टम) के निराकार मालिक — शिव निराकार। वे सौरमंडल के परम धाम में निवास करते है।

**संकल्प** — एक दिव्य संकल्प या दृढ़ निश्चय। संकल्प कोई साधारण इच्छा नहीं — यह आध्यात्मिक शक्ति से आवेशित एक संकल्प है। जैसे-जैसे ज्ञान और योग के माध्यम से आत्मा की आभा बढ़ती है, वह संसार के कल्याण के लिए जो संकल्प करती है, वह क्रमशः और निश्चित रूप से फलित होता है। जब आत्मा कुछ करने का निश्चय करती है, इसे संकल्प या अफर्मेशन कहते हैं। मन की शक्ति आत्मा की शक्ति है। अतः जितनी अधिक कला, उतनी अधिक संकल्प की शक्ति।

**संकल्प शक्ति** — यह किसी आत्मा के दृढ़ निश्चय या संकल्प की शक्ति है। जब आत्मा में अपार शक्ति होती है, तो वह संकल्प द्वारा सृष्टि को प्रकट कर सकती है। जब आत्मा में शक्ति नहीं होती, तब संकल्प की शक्ति निष्प्रभावी हो जाती है।

**सनातन** — सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा — शाश्वत।

**साकार / साकारी** — आत्मा की स्थूल अवस्था। जब आत्मा मृत्युलोक में पहुँचकर पाँचों तत्वों का मानव शरीर धारण करती है, तब वह साकारी अवस्था में प्रवेश करती है; कारण और सूक्ष्म शरीर उसके आंतरिक मूल में बने रहते हैं। जब आत्मा की ऊर्जा और क्षीण हो जाती है, तो वह एक स्थूल शरीर धारण कर लेती है।

**सुदर्शन चक्र** — लाइट का आकार — संकल्प से प्रकट होता, संकल्प से गायब हो जाता।

**सूक्ष्म जगत** — साधारण भौतिक बोध से परे का सूक्ष्म, अदृश्य संसार। सृष्टि का एक आयाम जो सूक्ष्म तत्वों से बना है, स्थूल नेत्र के लिए अदृश्य।

**स्थूल जगत** — पांच स्थूल तत्वों की दिखने वाली दुनिया।

**33 कोटि देवी-देवता** — धरती के बड़े ऋषि-मुनियों की मूल आत्माएं — जो कम से कम जी2 से आई हैं।

# आगामी फिल्म

· ✶ ·

## परमशांति: अंतिम परम सत्य

बापूजी दशरथभाई पटेल पर आधारित एक आध्यात्मिक फिल्म

विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय द्वारा प्रस्तुत

**2026 में**

जल्द ही... पूरी दुनिया जानेगी

बापूजी दशरथभाई पटेल के दिव्य जीवन, आध्यात्मिक यात्रा और अंतिम परम सत्य की अनुभूति पर आधारित एक आगामी आध्यात्मिक जीवनीपरक फिल्म।

यह फिल्म बापूजी की असाधारण यात्रा को दर्शाती है—एक ऐसे बालक से, जिसने मानवता के दुःख को देखकर ईश्वर से प्रश्न किए, से लेकर परमशांति की सर्वोच्च आध्यात्मिक अनुभूति तक —अंतिम परम सत्य, अर्थात् परम और अंतिम सत्य।

## जल्द आ रही है....

# हमसे जुड़ें

बापूजी और परमशांति परिवार के साथ इस यात्रा को जारी रखें। बापूजी के दैनिक लाइव सत्र, निर्देशित ध्यान और वीडियो शिक्षाएँ — सभी के लिए निःशुल्क और उपलब्ध हैं।

**ईमेल**

[anant@paramshanti.org](mailto:anant@paramshanti.org)

[ankur@paramshanti.org](mailto:ankur@paramshanti.org)

**वेबसाइट्स**

[www.paramshanti.org](http://www.paramshanti.org)

[www.paramshantiblogs.org](http://www.paramshantiblogs.org)

**यूट्यूब चैनल्स**

youtube.com/@BapujiDashrathbhaiPatel

youtube.com/@maakadivyasandesh7661

youtube.com/@spiritualpodcastwithanant

youtube.com/@paramshantimeditation

**फेसबुक**

facebook.com/discoveryofnewworldcom

facebook.com/bapujidashrathbhaipatel

**इंस्टाग्राम:**

instagram.com/bapujidashrathbhaipatel

https://www.instagram.com/paramshanti.motivation?igsh=MWV3aXIzcXhyd3lmMQ==

https://www.instagram.com/spiritualpodcastwithanant?igsh=MTNrZGkwNjE1a3V2MQ==

**X (ट्विटर):**

x.com/bapujiofficial

x.com/sakshipatel85

x.com/anant982511

**व्हाट्सऐप चैनल्स**

व्हाट्सऐप चैनल 1:

https://whatsapp.com/channel/0029VaGpKERBvvsfluYm0R1a

व्हाट्सऐप चैनल 2:

https://whatsapp.com/channel/0029VaI3s52KwqSPsa4x1k1T

**और पुस्तकें देखें:**

बापूजी दशरथभाई पटेल की और पुस्तकें खोजें। संपूर्ण संग्रह देखने के लिए [www.paramshantiblogs.org](http://www.paramshantiblogs.org) पर जाएँ — ये पुस्तकें विश्वभर के प्रमुख ईबुक स्टोर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर भी उपलब्ध हैं।

**परमशांति ऐप्स — अब उपलब्ध:**

परमशांति के दो नए ऐप्स अभी लॉन्च हुए हैं। अधिक जानकारी के लिए [www.paramshantiblogs.org](http://www.paramshantiblogs.org) पर जाएँ।

**पता**

विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय

c/o परमशांति भवन, चेनपुर

चेनपुर बस स्टैंड के पास, न्यू रानिप रोड

अहमदाबाद, गुजरात – 382470, भारत

# परमशांति पुस्तकालय

▪ ✶ ▪

## *बापूजी दशरथभाई पटेल की अन्य पुस्तकें पढ़ें*

निम्नलिखित पुस्तकें बापूजी दशरथभाई पटेल की दिव्य शिक्षाओं एवं बेहद ज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक ज्ञान श्रृंखला का हिस्सा हैं। प्रत्येक ई-पुस्तक ज्ञान दान महादान की भावना से निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। संपूर्ण पुस्तक संग्रह [www.paramshantiblogs.org](http://www.paramshantiblogs.org) पर देखें। ये पुस्तकें विश्वभर के प्रमुख ई-पुस्तक स्टोर्स एवं डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर भी उपलब्ध हैं।

परमशांति पुस्तक संग्रह सभी भाषाओं में मिलाकर 200 से अधिक पुस्तकों तक पहुँच चुका है, जो बापूजी की शिक्षाओं को विश्वभर के पाठकों तक पहुँचा रहा है।

अब विश्व की दस सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में पढ़ें — वर्तमान में ये पुस्तकें बारह भाषाओं में उपलब्ध हैं: अंग्रेज़ी, हिन्दी, चीनी, बांग्ला, रूसी, जापानी, फ़्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, अरबी, इंडोनेशियाई तथा पुर्तगाली।

ये सभी पुस्तकें शीघ्र ही हिन्दी तथा अन्य सभी प्रमुख भाषाओं में भी उपलब्ध होंगी। नए अनुवाद नियमित रूप से प्रकाशित किए जाते हैं, इसलिए जिस पुस्तक को आप अपनी भाषा में खोज रहे हैं, संभव है कि वह पहले से ही उपलब्ध हो। नए प्रकाशनों, अनुवादों, कार्यक्रमों तथा अन्य सभी अपडेट्स की जानकारी सबसे पहले प्राप्त करने के लिए हमारे चैनल को सब्सक्राइब करें।

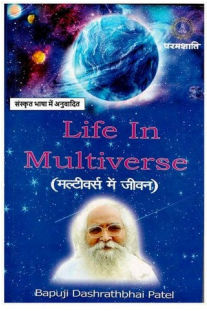


**Life in Multiverse**

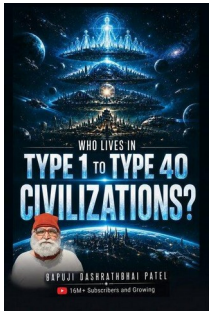


**Type 1 to Type 40 Civilizations**

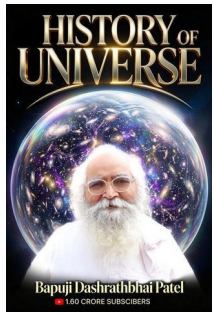


History of Universe

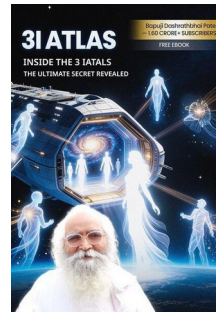


3i Atlas

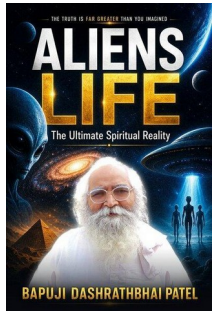


Aliens Life

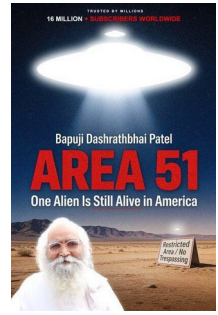


Area 51

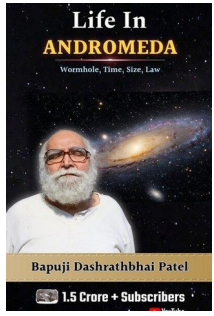


Life in Andromeda

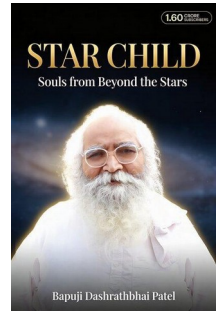


Star Child

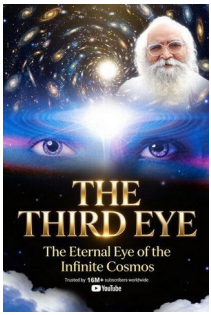


The Third Eye

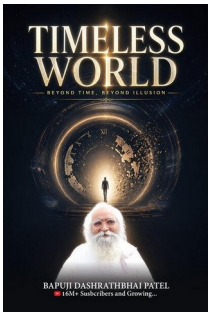


Timeless World

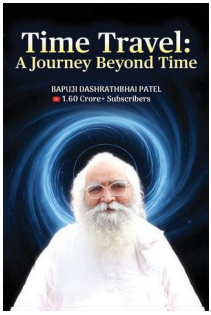


Time Travel

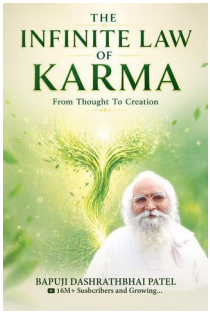


The Infinite Law of Karma

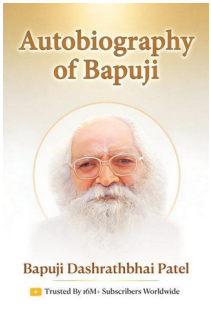


Autobiography of Bapuji

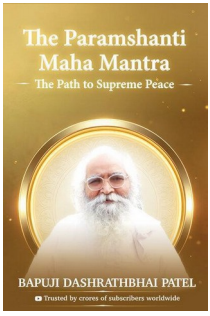


Paramshanti Maha Mantra

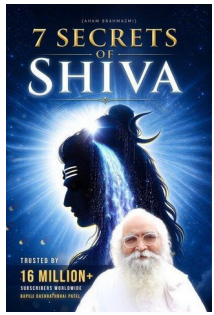


7 Secrets of Shiva

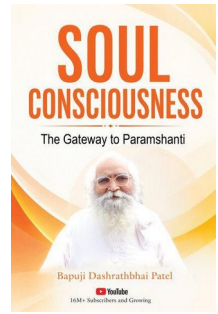


Soul Consciousness

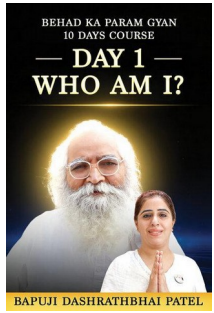


Day 1 — Who Am I?

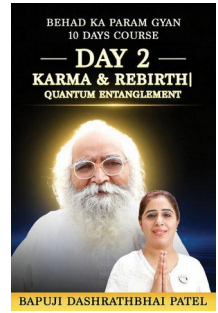


Day 2 — Karma & Rebirth

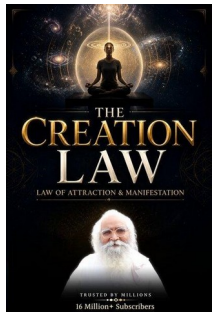


The Creation Law

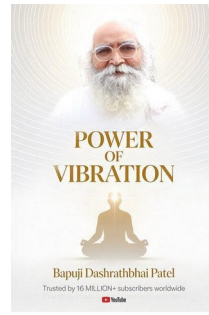


Power of Vibration

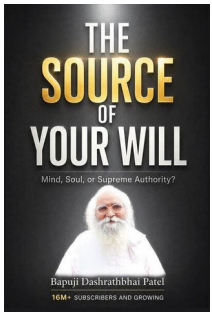


**The Source of Your Will**

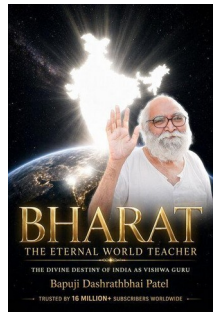
BHARAT
THE ETERNAL WORLD TEACHER
THE DIVINE DESTINY OF INDIA AS VISHWA GURU
Bapuji Dashrathbhai Patel
TRUSTED BY 16 MILLION+ SUBSCRIBERS WORLDWIDE

**Bharat: World Teacher**

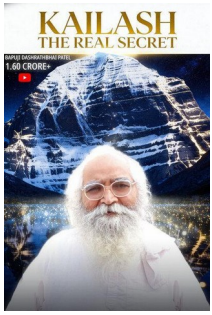


**Kailash: The Real Secret**

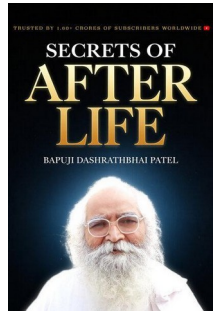


**Secrets of After Life**

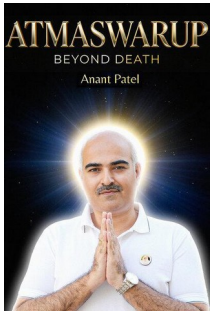


**Atmaswarup: Beyond Death**

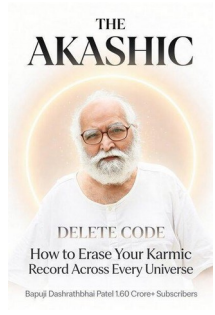


**The Akashic Delete Code**

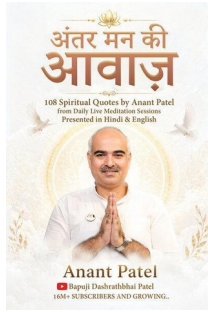


**Antar Man Ki Awaaz**

# THE PARAMSHANTI BOOK SERIES

*Continue Your Spiritual Journey*

| No. | Book Title |
|---|---|
| 1. | The Infinite Law of Karma: From Thought to Creation *(also available in: Hindi)* |
| 2. | Who Lives in Type 1 to Type 40 Civilizations? *(also available in: Chinese, Hindi, Spanish)* |
| 3. | Life in the Multiverse *(also available in: Arabic, Chinese, French, German, Indonesian, Japanese, Portuguese, Russian, Spanish)* |
| 4. | Spiritual Science of Parallel Universe |
| 5. | The Divine Science of Remote Viewing |
| 6. | Pass the Light Forward (Gyaan Daan Mahadaan) *(also available in: Hindi)* |
| 7. | 7 Secrets of Shiva *(also available in: Bengali, Hindi, Japanese, Russian)* |
| 8. | The Paramshanti Maha Mantra *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 9. | Beyond the Old World: The Journey to 100D *(also available in: Hindi)* |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 10. | Aura *(also available in: Hindi, Russian)* |
| 11. | Quantum Entanglement |
| 12. | Atmaswarup: Beyond Death |
| 13. | Soul Healing *(also available in: Hindi)* |
| 14. | Life in Andromeda *(also available in: Arabic, Bengali, Chinese, Japanese, Russian)* |
| 15. | Inside the 3i Atlas *(also available in: Arabic, Indonesian, Japanese, Russian)* |
| 16. | AI Stealing Soul Power |
| 17. | Who Are Behad Souls?: The Chosen Ones *(also available in: Hindi)* |
| 18. | Inside the Sun Secrets |
| 19. | Area 51 *(also available in: Chinese, Indonesian, Russian)* |
| 20. | History of the Universe *(also available in: Arabic, Chinese, German, Hindi, Indonesian, Japanese, Russian, Spanish)* |
| 21. | Decoding DNA: The Soul's Blueprint Beyond Biology *(also available in: Hindi)* |
| 22. | Self-Realization vs God's Realization |
| 23. | The Third Eye: Soul Supreme Cosmic Vision *(also available in: Hindi)* |
| 24. | Mantra Siddhi *(also available in: Hindi)* |
| 25. | Kundalini Jagran *(also available in: Hindi)* |
| 26. | Brahm Gyan *(also available in: Bengali)* |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 27. | आत्मस्वरूप से परमलाइट की प्राप्ति |
| 28. | Anant Koti Brahmandon Ka Mahakal Pralay *(also available in: Hindi)* |
| 29. | Supreme Knowledge of the Infinite |
| 30. | Death Is No More |
| 31. | Star Child *(also available in: French, Indonesian, Japanese, Spanish)* |
| 32. | Time Travel: A Journey Beyond Time *(also available in: Chinese, German, Hindi, Japanese)* |
| 33. | Today's Mahabharata |
| 34. | The Akashic Delete Code |
| 35. | Unmasking Superhuman Abilities *(also available in: Hindi)* |
| 36. | Kailash: The Real Secret *(also available in: Hindi)* |
| 37. | Power of Vibration *(also available in: Hindi)* |
| 38. | Secrets of Afterlife *(also available in: Hindi)* |
| 39. | Bharat: The Eternal World Teacher *(also available in: Bengali, Chinese, Hindi, Spanish)* |
| 40. | Three Bodies: Physical, Subtle, Causal *(also available in: Bengali, Hindi, Japanese, Portuguese)* |
| 41. | The Source of Your Will: Free Will vs God's Will |
| 42. | Timeless World: Beyond Time, Beyond Illusion |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 43. | Autobiography of Bapuji *(also available in: Bengali, Chinese, Hindi, Spanish)* |
| 44. | Forgiveness: The Real Freedom |
| 45. | Behad Gyan Ke Moti — 108 Quotes by Bapuji *(quotes in Hindi and English)* |
| 46. | Antar Man Ki Awaaz — 108 Quotes by Anant Patel *(quotes in Hindi and English)* |
| 47. | Antar Man Ka Prakash — 108 Quotes by Sakshi Patel *(quotes in Hindi and English)* |
| 48. | Mahavatar Babaji and the Hidden Spiritual Army *(also available in: Hindi)* |
| 49. | Soul Consciousness: The Gateway to Paramshanti *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 50. | Behad Gyan — Day 1: Who Am I? *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 51. | Behad Gyan — Day 2: Karma & Rebirth *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 52. | Behad Gyan — Day 3: Time and Dimensions *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 53. | Behad Gyan — Day 4: Creation of Earth *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 54. | Behad Gyan — Day 5: Galaxy Creation *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 55. | Behad Gyan — Day 6: Universe and Multiverse *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 56. | Behad Gyan — Day 7: Creation of Multiverse *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 57. | Behad Gyan — Day 8: The Infinite Cosmic System *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 58. | Behad Gyan — Day 9: Who is the Almighty Authority *(also available in: Bengali, Hindi)* |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 59. | Behad Gyan — Day 10: Soul Journey *(also available in: Bengali, Hindi)* |
| 60. | The Creation Law: Law of Attraction & Manifestation |
| 61. | Aliens Life: The Ultimate Spiritual Reality *(also available in: Bengali, Chinese, Indonesian, Japanese, Spanish)* |
| 62. | The Real Truth of Afterlife: Life After Death *(also available in: Hindi)* |
| 63. | Shiva & Black Hole: Mahadev and Black Hole Mystery *(also available in: Russian)* |
| 64. | Mars: The Lost Civilization *(also available in: Bengali, Chinese, French, German, Japanese, Russian)* |
| 65. | Pyramids: The Soul's Mystery *(also available in: Chinese, French, Russian)* |
| 66. | Soul Journey *(also available in: Chinese, Indonesian, Japanese, Russian)* |
| 67. | The Almighty Authority |
| 68. | The Hidden Science of Souls: Divine Mystery of Soul Kalas, Powers, Levels and Categories *(also available in: Hindi)* |
| 69. | Astral Travel: What I Saw Beyond Earth |
| 70. | Death: A Created System, Why? |
| 71. | Ancestors: The Souls Who Wait *(also available in: Hindi)* |
| 72. | The Untold Story of Earth: From Light to Matter *(also available in: Hindi)* |
| 73. | Eternal Mysteries of the Soul *(also available in: Hindi, Russian)* |
| 74. | The Soul Never Sleeps *(also available in: Hindi)* |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 75. | The Memory of the Soul: Who Shows Your Past Life? |
| 76. | The Cosmic Gita |
| 77. | The Ashtavakra Gita *(also available in: Hindi)* |
| 78. | The Great Masters of the Himalayas *(also available in: Hindi)* |
| 79. | Infinite Love for Atheists *(also available in: Hindi)* |
| 80. | God is One, Truth is One |
| 81. | Beyond Moksha: The Soul's Journey to Immortal Liberation |
| 82. | Mind Before Matter *(also available in: Hindi)* |
| 83. | The Language of the Spirit World |
| 84. | Laws of the Invisible Realm *(also available in: Hindi)* |
| 85. | The Multiverse Roadmap *(also available in: Hindi)* |
| 86. | Why Predictions Fail |
| 87. | The Art of Becoming Fearless *(also available in: Hindi)* |
| 88. | The Stress-Free Life |
| 89. | Bapuji Meditation *(also available in: Hindi)* |
| 90. | The Art of Meditation *(also available in: Hindi)* |
| 91. | The Eternal Sound of the Universe |

| No. | Book Title |
|---|---|
| 92. | AI and the Next Civilization |
| 93. | Power of Thought *(also available in: Hindi)* |
| 94. | The Golden Hour of the Soul *(also available in: Hindi)* |
| 95. | Spiritual Womb Care: Garbh Sanskaar *(also available in: Hindi)* |
| 96. | The Last Secret of the Mind *(also available in: Hindi)* |
| 97. | The Guru and the Subtle World *(also available in: Hindi)* |
| 98. | ज्ञानी आत्माओं के 4 महान पुरुषार्थ: ज्ञान, योग, सेवा, धारणा |
| 99. | The Past Life Connection: A Bond That Existed Before Birth *(also available in: Hindi)* |
| 100. | The Beginner's Guide to the Soul: Understand Your True Self and Begin Your Spiritual Awakening |

और भी अनेक पुस्तकें, तथा नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले नए शीर्षक।

***"ज्ञान दान महादान"***

ज्ञान का वितरण ही सर्वोच्च दान है।

**बापूजी दशरथभाई पटेल**

# श्रीकृष्ण वास्तव में कौन थे?

यह पुस्तक इन प्रश्नों पर एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो सामान्य मान्यताओं से कहीं आगे जाकर सोचने के लिए प्रेरित करता है।

बापूजी की वाणी पर आधारित यह ज्ञान पाठक को ब्रह्मांड, गीता, श्रीकृष्ण और विश्व परिवर्तन के गहरे रहस्यों की एक अद्भुत यात्रा पर ले जाता है।

भारत के लोकफिय आध्यात्मिक यूटयूब चैनलों में से एक

यूटयूब पर *6000+* वीडियो

www.paramshanti.org

www.paramshantiblogs.org